सम्पादकीय
आज के सबसे बड़े संकट नशासुर से हमें बचना और समाज को बचाना होगा 2

पर्यावरण संरक्षण
गोबर के कंडों से अंतिम संस्कार कर बचाए जा रहे हैं पेड़ 3

ऑस्ट्रेलिया में ज्योति कलश यात्रा का शुभारंभ हुआ 6,7

साउथ ऑस्ट्रेलिया की संसद में मिला विशिष्ट सम्मान 8

पहलगाम में हुई आतंकी घटना के विरुद्ध आक्रोश 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

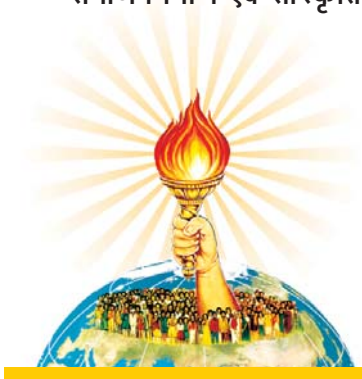

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान मध्य प्रदेश

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

E-mail: news@awgp.org

16 मई 2025

वर्ष : 37, अंक : 22
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 मई 2025
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

युग निर्माण सत्संकल्प-1

हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को जीवन में उतारेंगे।

आस्था : ईश्वर के अस्तित्व से इन्कार नहीं किया जा सकता। हर वस्तु का कोई निर्माता होता है, तो इतने विशाल, इतने व्यवस्थित विश्व का कोई निर्माता न हो ऐसा नहीं हो सकता। वह निर्माता धर्म, विवेक और आदर्श से रहित नहीं है। वह हमें जहाँ अगणित प्रकार की सुख-सुविधाएँ देता है, वहाँ हमारे कार्यों के भले-बुरे परिणामों की व्यवस्था भी करता है।

घट-घट वासी सर्वान्तर्यामी भगवान अपने असंख्य नेत्रों से हमारे गुप्त-प्रकट कार्यों और विचारों को भली प्रकार जानते हैं। उनकी प्रसन्नता-अप्रसन्नता, सत्प्रवृत्तियों और दुष्प्रवृत्तियों पर निर्भर है। दुःख और सुख मिलने का आधार भी यही है। कोई कुकर्मी पाप-दण्ड से बच नहीं सकता, कोई सुकर्मी सुख-शान्ति का अधिकारी न बने ऐसा भी नहीं हो सकता। निष्पक्ष न्यायाधीश की भाँति परमात्मा हमारे हर भले-बुरे कर्मों का प्रतिफल उत्पन्न करता है। जिसे यह विश्वास होगा, उसकी असुरता घटेगी और देवत्व विकसित होगा। वह दुष्ट-दुर्जन नहीं बन सकता। उसके लिए सज्जनता और कर्त्तव्यशीलता का ही एकमात्र मार्ग अपनाने के लिए रह जाता है।

न्यायनिष्ठा : आस्तिक को इस बात का सदा ध्यान रहेगा कि सबको अनुशासन में रखने वाला परमेश्वर स्वयं भी नियम व्यवस्था में बँधा है। न्यायनिष्ठ जज की तरह ईश्वर किसी के साथ पक्षपात नहीं करता। स्तवन अर्चन करके उसे उसके नियम, विधान से विचलित नहीं किया जा सकता है। यदि वह कुछ उच्छृंखलता एवं अव्यवस्था बरतेगा तो फिर उसकी सृष्टि में पूरी तरह अंधेरखाता फैल जाएगा। जो चापलूस स्तुति कर दे, उससे प्रसन्न; जो पुष्प नैवेद्य भेंट करे, उससे प्रसन्न। फिर कोई उसे न तो न्यायकारी कहेगा और न समदर्शी। तब उसे खुशामदी या रिश्वतखोर नाम से पुकारा जाने लगेगा।

सर्वव्यापकता : भगवान को हम सर्वव्यापक एवं न्यायकारी समझकर गुप्त या प्रकट रूप से अनीति अपनाने का कभी भी, कहीं भी साहस न करें। केवल बंसी बजाने वाले और रास रचाने वाले ईश्वर का ही ध्यान न रखें, उसका त्रिशूलधारी भी एक रूप है, जो असुरता में निमग्न दुरात्माओं का नृशंस दमन, मर्दन भी करता है। न्यायनिष्ठ जज को जिस प्रकार अपने सगे संबंधियों, प्रशंसक मित्रों तक को कठोर दंड देना पड़ता है, फाँसी एवं कोड़े लगाने की सजा देने को विवश होना पड़ता है, वैसे ही ईश्वर को भी अपने भक्त-अभक्त का, प्रशंसक-निंदक का भेद किए बिना उसके शुभ-अशुभ कर्मों का दंड पुरस्कार देना होता है। इसीलिए संसार में सुखी एवं दुःखी, स्वस्थ एवं पीड़ाग्रस्त सब प्रकार के लोग दिखाई पड़ते हैं।

उपासना-प्रार्थना : उपासना का उद्देश्य ईश्वर से अनुचित पक्षपात कराना नहीं होना चाहिए, वरन यह होना चाहिए कि वह हमें अपनी प्रसन्नता के प्रमाणस्वरूप सद्भावनाओं से ओत-प्रोत रहने, सत्प्रवृत्तियों में संलग्न रहने की प्रेरणा, क्षमता एवं हिम्मत प्रदान करे, भय एवं प्रलोभन के अवसर आने पर भी सत्पथ से विचलित न होने की दृढ़ता प्रदान करे। पापों से डर और पुण्य से प्रेम, यही तो भगवद्-भक्त के प्रधान चिह्न हैं। कोई व्यक्ति आस्तिक है या नास्तिक, इसकी पहचान किसी तिलक, जनेऊ, कंठी, माला, पूजा-पाठ, स्नान, दर्शन आदि के आधार पर नहीं, वरन् भावनात्मक एवं क्रियात्मक गतिविधियों को देखकर ही की जा सकती है।

ईश्वर-भक्ति : आस्तिक की मान्यता प्राणिमात्र में ईश्वर की उपस्थिति देखती है। इसलिए उसे हर प्राणी के साथ उदारता, आत्मीयता एवं सेवा सहायता से भरा मधुर व्यवहार करना पड़ता है। भक्ति का अर्थ है-प्रेम। जो प्रेमी है, वह भक्त है। भक्ति भावना का उदय जिसके अंतःकरण में होगा, उसके व्यवहार में प्रेम की अजस्त्र निर्झरिणी बहने लगेगी। वह अपने प्रियतम को सर्वव्यापक देखेगा और सभी से अत्यंत सौम्यतापूर्ण व्यवहार करके अपनी भक्ति भावना का परिचय देगा। ईश्वर दर्शन का यही स्वरूप है।

हम समर्थ संघशक्ति उत्पन्न करें

संघशक्ति की सदा ही प्रमुखता रही है, पर इस युग में तो उसका महत्त्व सर्वोपरि है। बुद्धिबल, धनबल, श्रमबल के चमत्कार इस संसार में बिखरे पड़े हैं। इन तीनों बलों का उपार्जन करने के लिये सरस्वती के रूप में बुद्धि की, लक्ष्मी के रूप में धन की, दुर्गा के रूप में श्रम की पूजा-उपासना करते हैं, पर हम उस संघशक्ति का महत्त्व भुला देते हैं, जो सर्वोपरि है।

गायत्री महामंत्र समूहवाद का मन्त्र है। इसका तत्त्वज्ञान 'नः' शब्द में सन्निहित है। यह कहता है कि एकाकीपन में नहीं, संगठित एवं सम्मिलित प्रयत्नों में ही मानवीय कल्याण का श्रेय-साधन छिपा हुआ है।

एकाकीपन में जड़ता और नीरसता है। कोई परमहंस स्थिति को पहुँचा हुआ व्यक्ति ही उसमें आनंद ले सकता है, सो भी तब, जब विश्वात्मा के साथ अपनी आत्मा को पिरोकर सूक्ष्म चेतनास्तर पर वसुधैव कुटुम्बकम् का रस पीने लगे। अन्यथा एकाकी जीवन बहुत ही विकृत एवं कष्टसाध्य बन जाता है। जेल में क्रूर कैदियों को सबसे बड़ी सजा 'काल कोठरी' की दी जाती है। उसे एक अलग कोठरी में बन्द रहना पड़ता है। काम कुछ नहीं करना पड़ता। यह एकाकीपन कैदी को इतना अखरता है कि उसे एक-एक दिन काटना पहाड़ की तरह कठिन हो जाता है। झुण्ड छोड़कर जो वन्यपशु अकेले रहने लगते हैं, वे बडे क्रूर प्रकृति के हो जाते हैं। अकारण पेड़ पौधों को तोड़ते हैं और जीवों पर आक्रमण करते हुए अपनी दुष्टता का प्रदर्शन करते रहते हैं।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। मनुष्यता का निखार सामूहिक जीवन में ही सम्भव है। सम्मिलित जीवन में एक उल्लास भरी शक्ति उत्पन्न होती है। उसी की उपलब्धि के लिये गृहस्थ लोग परिवार बसाते हैं, विरक्त लोग अखाड़े, आश्रम, मठ तथा सम्प्रदाय खड़े करते हैं। मेले-ठेलों में जाना हर दृष्टि से असुविधाजनक, कष्टकर एवं खर्चीला ही पड़ता है, फिर भी लोग बड़े चाव के साथ जाने की तैयारी करते हैं, क्योंकि जन संकुल वातावरण में एक ऐसा आनन्द रहता है, जिससे सहज ही बहुत आनन्द मिलता है। विवाह, बरातों में जाकर प्रसन्न होने का यही कारण है।

सम्मिलित जीवन में केवल प्रसन्नता ही नहीं मिलती, उसमें शक्ति भी सन्निहित है। एकाकी व्यक्ति कितना ही समर्थ क्यों न हो, कुछ बड़ा काम नहीं कर सकता, पर बहुत से अल्प सामर्थ्यवान मिलकर बहुत बड़ा काम कर सकते हैं। टिड्डीदल फसलों और जंगलों को सफाचट कर देता है। चींटियों का एक छोटा दल हाथी की सूँड में प्रवेश कर गजराज को मृत्यु के मुख में पहुँचा देता है।

समूह की शक्ति असाधारण है। नव-निर्माण के लिये हमें इसी महाशक्ति को जागृत एवं प्रयुक्त करना पड़ेगा। एकाकी प्रयत्नों से इतना बड़ा महाअभियान सम्पन्न नहीं हो सकता, चाहे उसका संचालक कितना ही समर्थ व्यक्ति क्यों न हो।

भगवान राम को मनुष्य सहयोगी न मिले, तो रीछ-वानरों की सेना बनाकर असुरता से लड़ने चले। भगवान कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत उठाया तो उसके लिए ग्वाल-बालों का सहयोग लिया। महाभारत में वे अकेले भी लड़ सकते थे, पर पाण्डवों तथा उनकी छोटी सेना को संगठित करके ही उन्होंने उस कार्य को हाथ में लिया। शिवजी सर्व समर्थ हैं, पर अपने प्रयोजनों की पूर्ति वे अपने वीरभद्र, नन्दी, भूत, बेतालों की गण-सेना द्वारा ही कराते हैं। प्रजापति ने देवताओं की थोड़ी-थोड़ी शक्ति इकट्ठी कर, उससे दुर्गा को उत्पन्न किया, जो मधु-कैटभ, महिषासुर, शुंभ-निशुम्भ का ससैन्य संहार करने में समर्थ हुई। संघशक्ति सर्वत्र ऐसे ही चमत्कार उत्पन्न करती है।

युगनिर्माण के लिये हमें सज्जनों की, धर्मनिष्ठ व्यक्तियों की शक्ति का एकीकरण करना पड़ेगा। वे आज बिखरे हुए हैं, इसीलिए दुर्बल पड़ रहे हैं, हार रहे हैं। असुरता से देवत्व की शक्ति कहीं अधिक है, पर वह हारती एक ही कारण से है कि वह संगठन की ओर उपेक्षा बरतती रहती है।

जब तक सज्जनों की संघशक्ति का सृजन न होगा, तब तक हमारी महान योजनायें कल्पना लोक में ही विचरण करती रहेंगी। देव प्रकृति के व्यक्ति यदि संगठित होकर सदुद्देश्य के लिए कदम बढ़ायें तो आश्चर्यजनक सफलता सुनिश्चित है। हमें यही करना होगा। हर देव प्रकृति के व्यक्ति को संगठन का महत्त्व समझाना होगा, उन्हें संघबद्ध होने के लिए आग्रह और अनुरोधपूर्वक तैयार करना होगा। उनकी सम्मिलित शक्ति को नवनिर्माण के लिए प्रयुक्त करना होगा। इस दिशा में जितनी सफलता मिलती जायेगी, युग परिवर्तन का पथ उतना ही प्रशस्त होता चला जायेगा।

(अखण्ड ज्योति, जनवरी 1968, पृष्ठ 11-12 से संकलित-सम्पादित)

आज के सबसे बड़े संकट नशासुर से हमें बचना और समाज को बचाना होगा

हर शरणागत की रक्षक माँ गायत्री को जन-जन तक पहुँचाना है, नशा भारत छोड़ो अभियान को सफल बनाना है

नशे का कहर

आज विश्व में पर्यावरण संकट, आतंकवाद, युद्धोन्माद, गरीबी, भुखमरी जैसी अनेक समस्याएँ हैं, जिनके कारण मानवता घोर अशांति, अनिश्चितता, भय के संकट से गुजर रही है। इन समस्याओं के समाधान के लिए व्यक्तिगत प्रयासों के साथ सामाजिक सहयोग की भी आवश्यकता है, लेकिन नशा एक ऐसी समस्या है, जो व्यक्ति ने स्वयं ओढ़ी हुई है। वह अपनी अविवेकपूर्ण नासमझी से बचे तो आजीवन सुख-शान्ति से रह सकता है। यदि वह नशे का आदी हो गया है तो समझदारी और संकल्प के सहारे स्वयं इस नशासुर के चंगुल से छूटकर नरक जैसे जीवन में स्वर्ग की सृष्टि कर सकता है।

नशा जीवन की आवश्यकता कदापि नहीं है। 90% या उससे अधिक लोग नशे का आरंभ कौतूहलवश ही करते हैं। आज पूरे विश्व में फैला अराजक तत्त्वों का गिरोह चंद रुपयों के लालच में इसी कौतूहल को जगाकर विद्यार्थियों और युवाओं को नशे का गुलाम बना रहा है। महान वटवृक्ष की संभावना वाले बीज का अंकुर फूटता ही है कि उसमें नशा रूपी दीमक लगाकर उसे जीवन भर के लिए खोखला कर दिया जाता है। जिसे एक बार नशे की लत लग गई, वह फिर दलदल की तरह उसमें धँसता ही जाता है।

क्या हम जानते हैं कि नशीले पदार्थों का सेवन करना कितना भयानक है? भारत सरकार द्वारा 14 दिसम्बर 2022 को सर्वोच्च न्यायालय में दिये गए आँकड़े बताते हैं कि हमारे देश में -

- 1.58 करोड़ बच्चे (10 से 17 वर्ष के) शराब, गाँजा और चरस जैसे नशों के आदी हैं।
- 16 करोड़ लोग शराब पीते हैं, जिनमें से 5.7 करोड़ लोगों को तुरंत सहायता की आवश्यकता है।
- 3.1 करोड़ लोग गाँजा और चरस तथा 2.26 करोड़ लोग अफीम का सेवन करते हैं। सिगरेट, तम्बाकू जैसे नशीले पदार्थों का सेवन करने वाले लोगों को जोड़ दिया जाये तो संख्या आसमान छूने लगेगी।

हम प्राचीन काल में महिषासुर, अघासुर, बकासुर, भस्मासुर जैसे अनेक राक्षसों के कथानक सुनते आये हैं। आज के युग में यह 'नशासुर' इन प्राचीन काल के असुरों से हजारों गुना शक्तिशाली है। यह जिसके सिर पर हाथ रख देता है, वह धीरे-धीरे मौत के मुँह में जाने लगता है या नारकीय जीवन की ओर बढ़ता जाता है।

- नवभारत टाइम्स में सन् 2018 में प्रकाशित रिपोर्ट बताती है कि तंबाकू के सेवन और धूम्रपान से भारत में प्रतिदिन 2739 लोगों की मौत हो रही है।
- प्रतिदिन 50 अरब रुपयों की सिगरेट का धुआँ वातावरण में छोड़ा जाता है, जिसमें से 15% धुआँ धूम्रपान करने वालों के कलेजे में जाता है और शेष 85% आसपास के वातावरण को दूषित कर दूसरों को नुकसान पहुँचाता है।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन का मानना है कि सन् 2030 तक दुनिया में नशे के कारण 20 करोड़ लोगों की मौत हो चुकी होगी, जिनमें से 40% लोग भारत के होंगे।

यहाँ स्थानाभाव के कारण अधिक आँकड़े नहीं दिये जा सकते। जिन्हें इनकी विस्तृत जानकारी प्राप्त करनी हो, उन्हें शान्तिकुञ्ज से प्रकाशित पुस्तक 'व्यसन मुक्ति मार्गदर्शिका-जागो और जगाओ' का अध्ययन करना चाहिए।

नशा क्या है?

शार्ङ्गधर संहिता कहती है-''बुद्धि विलुम्पति यत् द्रव्यं मदकारी तदुच्यते।' अर्थात् जिन वस्तुओं के सेवन से मनुष्य की बुद्धि लुप्त हो जाती हो, वे मादक हैं।

गुटखा, जर्दा, सिगरेट, तम्बाकू, चरस, शराब, हेरोइन, कोकीन, अफीम, ड्रग्स जैसे मादक पदार्थों से निकलने वाले निकोटिन जैसे विषैले तत्त्व नस-नाड़ियों, कोशिकाओं तथा दिमाग को भावशून्य कर देते हैं। इनसे वैसी ही भावनाएँ उत्पन्न होती हैं, जैसी कि लोगों को खुशी देने वाले कामों से मिलती हैं, लेकिन इस खुमारी की बहुत बड़ी कीमत उन्हें चुकानी पड़ती है। मन विक्षुब्ध और शरीर खोखला होता जाता है, साँस धीमी होती जाती है, उनींदापन छा जाता है। विज्ञान बताता है कि मादक पदार्थों के सेवन से मस्तिष्क की कुछ कोशिकाओं से डीपामाइन नामक हार्मोन का स्राव दिमाग में नशा सेवन की ऐसी उत्कट इच्छा पैदा करता है, जो नशेड़ी को बार-बार उस पदार्थ के सेवन के लिए प्रेरित करती है।

समय की विडंबना देखिए

कुछ लोग थकान मिटाने के लिए नशा करते हैं, कुछ तनावमुक्त होने के लिए तो कुछ कब्ज, सिरदर्द जैसी बीमारियों को दूर करने के लिए। कुछ लोग देखा-देखी उत्सुकतावश नशा करने लगते हैं तो कुछ गलत संगत का शिकार हो जाते हैं। बड़ी संख्या में लोग नशीले पदार्थों का प्रयोग आतिथ्य सत्कार और बड़प्पन के प्रदर्शन के लिए करते हैं।

इस नशे के कारण न जाने कितने घरों में चूल्हा नहीं जलता। दिन-रात लड़ाई-झगड़ों के कारण जिंदगी नरक बन जाती है। श्वास रोग और कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियाँ हो जाती हैं। नशे से बचा धन दवाओं में खर्च होता है, बच्चे पढ़-लिख नहीं पाते। आज समाज में चोरी, हत्या, लूटपाट, बलात्कार, आतंक और एक्सीडेंट जैसी घटनाओं का अधिकांश कारण नशा ही है।

समय की विडम्बना देखिये कि जो नशा केवल और केवल बर्बादी का कारण है, वह आज फैशन बनता जा रहा है। नशा सेवन मौज-शौक और पिकनिक पार्टियों का अनिवार्य अंग बन गया है। गली-गली हुक्काबार खुलते जा रहे हैं, इनमें जाना शान समझा जा रहा है। स्मैक (ब्राउन शुगर), एल एस डी, मॉर्फिन, हेरोइन, कोकीन, स्पीड बॉल, बार्बीचुरेट्स जैसे एक से एक घातक नशों का आविष्कार हो रहा है।

यह नशा देश को दीमक की तरह चाट रहा है। यह आतंकवाद को पोस रहा है। आज विश्व मानवता के समक्ष एक से एक बड़े संकट हैं, फिर भी नशे से बढ़कर दूसरा संकट और कोई नहीं। इन सबके बावजूद सरकारें इस संकट से आँखें मूँदे हुए हैं।

सरकारें आतंकवाद खत्म कर सकती हैं, नक्सलवाद समाप्त कर सकती हैं, गरीबी-भुखमरी का अंत कर सकती हैं, देश को विकसित राष्ट्र बना सकती हैं, फिर ऐसी क्या मजबूरी है कि मानवता को खोखला कर रहे नशा रूपी असुर के प्रति वे इतनी उदासीन हैं? यदि नशे पर अंकुश लग जाये, तो न जाने कितनी समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जायेगा।

माना जाता है कि शराब सरकारों के लिए राजस्व प्राप्ति का बहुत बड़ा साधन है, लेकिन यह भी सच है कि शराब के कारण होने वाली बीमारियों पर सरकारों को प्राप्त होने वाले राजस्व से कई गुना अधिक धन खर्च करना पड़ता है। इस उदासीनता का कारण तो सरकारें स्वयं समझें, लेकिन इतना सच है कि समझदारों को स्वयं ही चेतना होगा। परमात्मा के सर्वोत्तम उपहार को नरक बनाने से बचाना है तो सावधानी स्वयं ही रखनी होगी। 'जागो और जगाओ' यही मानवता की पुकार है, यही हमारी सबसे बड़ी नैतिकता है। यह आज का एक अनिवार्य युगधर्म है।

सर्वोत्तम उपाय-गायत्री उपासना

मानवता दिन दूनी, रात चौगुनी गति से नशे के दलदल में फँसती चली जा रही है। पतन के इस प्रवाह को रोकना आज का हमारा युगधर्म है। अपने बच्चों को वह प्रेरणा, संस्कार और वातावरण दें कि वे नशासुर के चंगुल में भूल से भी न फँसें। जो नशा करने लगे हैं, उन्हें समझा-बुझा कर, उनका सहयोग कर उनसे नशा छुड़ाया जाये। देखा गया है कि बहुत से लोग नशा छोड़ने का संकल्प ले लेते हैं, उसे छोड़ भी देते हैं, किन्तु जैसे ही वे स्वस्थ वातावरण से बाहर निकलकर पुराने वातावरण के संपर्क में आते हैं, वे फिर से नशा करने लग जाते हैं।

गायत्री उपासना नशामुक्ति का एक अत्यंत अचूक, प्रभावशाली माध्यम है। जिस घर-परिवार का वातावरण गायत्रीमय होता है, वहाँ के लोग नशे के दलदल में जाने से बच जाते हैं। गायत्री माता अपने साधक पुत्रों को खींचकर नशे के दलदल से बाहर ले ही आती हैं। बाल संस्कार शालाओं के माध्यम से, कन्या/किशोर कौशल शिविरों के माध्यम से, शान्तिकुञ्ज में व अन्य शिविरों के माध्यम से हमें लोगों को गायत्रीमय वातावरण के सेवन के लिए प्रेरित करना होगा। हमें उन्हें तब तक प्रेरत करते रहना होगा, जब तक उनके स्वयं के घर का वातावरण गायत्रीमय न हो जाये।

गायत्री परिवार का नशामुक्ति अभियान कई दशकों से अनवरत रूप से बड़े प्रभावशाली ढंग से चल रहा है। अपने मिशन का मूल लक्ष्य ही दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन और सत्प्रवृत्ति संवर्धन है। हर यज्ञ में बुराइयों की देवदक्षिणा का संकल्प दिलाया जाता है, जिसमें नशा-मांसाहार के त्याग की प्रेरणा प्रमुखता से दी जाती है। परम पूज्य गुरुदेव की इस अद्वितीय पहल ने लाखों लोगों के जीवन में आमूलचूल परिवर्तन किया है। उनकी प्रेरणा, कृपा और आशीर्वाद से दस्यु रत्नाकर से ऋषि वाल्मीकि बनने जैसी घटनाएँ वर्तमान समय में गायत्री परिवार में एक नहीं, सैकड़ों-हजारों की संख्या में सुनी, देखी जा सकती हैं।

जैसे प्रकाश के आते ही अंधकार स्वतः तिरोहित हो जाता है, उसी प्रकार गायत्री उपासना के प्रभाव से जीवन से बुराइयाँ स्वतः ही दूर होने लगती हैं। साबुन के स्पर्श से शरीर की गंदगी दूर हो जाती है, उसी प्रकार उपासना, साधना, स्वाध्याय के माध्यम से जैसे-जैसे जीवन में गायत्री का तेज बढ़ता जाता है, एक अदृश्य चेतना के प्रभाव से जीवन से स्वतः ही बुराइयाँ दूर होने लगती हैं और व्यक्तित्व में पवित्रता-प्रखरता का समावेश होता जाता है। ऐसा नहीं है कि करोड़ों लोगों के विराट गायत्री परिवार के सभी लोग प्रारंभ से ही व्यसनमुक्त थे। इनमें बहुत बड़ी संख्या ऐसी है, जो गायत्री परिवार से जुड़ने के बाद व्यसनमुक्त हुए हैं। जो भी माँ गायत्री की शरण में आया, माँ ने उसकी रक्षा की है। नवयुग सृजन अभियान में जुटे हम सबका यह दायित्व है कि हम हर व्यक्ति को गायत्री उपासना-साधना के लिए प्रेरित कर उन्हें नशे से बचायें, उन्हें उस दलदल से निकालें।

जनजागरूकता के विशेष अवसर, दो अंतरराष्ट्रीय पर्व-31 मई और 26 जून

हर वर्ष 31 मई का दिन 'अंतरराष्ट्रीय तंबाकू निषेध दिवस' और 26 जून का दिन 'नशीले पदार्थों के दुरुपयोग और उनकी अवैध तस्करी के विरुद्ध अंतरराष्ट्रीय दिवस' के रूप में मनाया जाता है। अखिल विश्व गायत्री परिवार का 'नशा भारत छोड़ो' अभियान अनवरत रूप से सक्रिय है, लेकिन इन विशेष दिनों में पूरे देश में जनजागरण यात्रा और सभाओं का आयोजन करते हुए नशामुक्ति की ओर समाज और शासन का ध्यान आकर्षित किया जाता है। अपने प्रयासों को प्रभावशाली बनाने के लिए केवल इन्हीं दो दिनों में नहीं, बल्कि चरणबद्ध कार्यक्रमों से पूरे समाज तक संदेश पहुँचाने की हमारी परंपरा रही है।

हमारी व्यसनमुक्ति जनजागरण यात्राएँ बड़ी आकर्षक और प्रभावशाली होती हैं। नशेड़ी की शवयात्रा, नुक्कड़ नाटक, नशामुक्ति फिल्मों का प्रदर्शन, नशासुर के पुतले का दहन, ओजस्वी व हृदयस्पर्शी नारे, सभा में प्रस्तुत किये जाने वाले, आँखें खोल देने वाले आँकड़े इन्हें आकर्षक और प्रभावशाली बनाते हैं। घर-घर नशा विरोधी स्टिकर लगाना, नशामुक्ति साहित्य बाँटना, लोगों से संकल्पपूर्वक नशीले पदार्थों की भिक्षा लेना जैसे क्रम भी हमारी जनजागरण यात्राओं को प्रभावशाली बनाते हैं। जनजागरण यात्रा की समापन सभा में उपस्थित लोगों को नशामुक्त जीवन जीने की शपथ दिलाई जाती है। पूरी यात्रा में लोगों को सहमत करते हुए प्रशासन से नशामुक्त समाज की माँग करने के लिए आवश्यक कदम उठाने की माँग वाले पत्रकों पर हस्ताक्षर कराने का अभियान भी चलाया जा सकता है।

जिला और प्रांतीय स्तर पर रैलियाँ

अंतरराष्ट्रीय तंबाकू निषेध दिवस (31 मई) तथा नशीले पदार्थों के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के विरुद्ध जनजागरूकता के लिए अंतरराष्ट्रीय दिवस (26 जून) के दिन जिला एवं प्रान्त स्तरीय विशाल जनजागरण यात्रा और सभाओं का आयोजन होता है। इनके अंत में गायत्री परिवार के प्रतिनिधि मण्डल द्वारा जिला स्तर पर माननीय मुख्यमंत्री जी के नाम विगत रैलियों में जन-जन द्वारा हस्ताक्षरित ज्ञापन जिला कलेक्टर को तथा प्रांतीय स्तर पर संभव हो तो सीधे माननीय मुख्यमंत्री जी को दिये जाते हैं। सरकारें व्यसनमुक्त समाज के निर्माण के लिए गंभीरतापूर्वक प्रयास करें, ऐसी प्रार्थना इन ज्ञापनों के माध्यम से किये जाने की आवश्यकता है।

विद्यालयों में जनजागरूकता

बचपन बड़ा कोमल होता है। यही बहकने और भटकने की उम्र है और यही सँभलने, सँवरने का समय भी है। अतः विद्यालयों को केन्द्र बनाकर नशामुक्त समाज के निर्माण के लिए बड़े प्रभावशाली प्रयास किये जाने चाहिए। ये कार्य हैं:-

- नशामुक्ति चित्र और साहित्य प्रदर्शनी लगाना।
- नशामुक्ति पर आधारित फिल्म दिखाना।
- पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से समझाना।

उपरोक्त तीनों ही प्रकारों से विद्यार्थियों को नशामुक्त जीवन जीने के लिए प्रेरित और संकल्पित किया जा सकता है।

व्यसनमुक्ति केन्द्र बनायें, उनमें नशे के आदी लोगों को उपयुक्त वातावरण प्रदान करते हुए साधना शिविर चलायें। व्यसनमुक्त हुए लोगों को साधना या स्वावलम्बन के किसी न किसी कार्य के साथ जोड़ दें। रचनात्मक सेवाकार्यों से जुड़ने से व्यक्ति को बदली हुई जीवन शैली में रहने के लिए उपयुक्त वातावरण मिलता है।

संकट अत्यंत गहरा है। इसके समाधान के लिए उसी स्तर के प्राणवान प्रयासों की आवश्यकता है।

पर्यावरण संरक्षण के लिए विशेष पहल

होने लगा गोबर के कण्डों से अंतिम संस्कार

6 माह में 70 अंत्येष्टि संस्कार कर 245 क्विंटल लकड़ी, 500 पेड़ बचाए

बुरहानपुर। मध्य प्रदेश

बुरहानपुर जिले में गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे गो-संवर्धन एवं पर्यावरण संरक्षण अभियान के अंतर्गत पिछले छः महीनों में गाय के गोबर से बने कंडों द्वारा 70 अंत्येष्टि संस्कार संपन्न किए गए। इससे लगभग 245 क्विंटल लकड़ी की बचत हुई, जिसके लिए संभवतः लगभग 500 पेड़ों को काटने की आवश्यकता होती। गोबर के कंडों से अंत्येष्टि संस्कार की यह परम्परा पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से एक क्रान्तिकारी पहल मानी जा सकती है।

गायत्री परिवार द्वारा कंडों से अंत्येष्टि कराने वाले परिवार को मृतक की स्मृति में रोपने के लिए एक पौधा भी भेंट किया जाता है।

गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं ने बताया कि यह 70 अंत्येष्टि संस्कार बुरहानपुर, नेपानगर, शाहपुर, दर्यापुर, चापोरा और खकनार के मुक्तिधामों में सम्पन्न कराए गए। गायत्री परिवार ने मोहल्लों, श्मशान घाटों व मुक्ति धामों में बैनर-पोस्टर लगाकर अभियान का व्यापक प्रचार किया है। सोशल मीडिया के माध्यम से भी इस अभियान को जन-जन तक पहुँचाया जा रहा है।

सुविधा और पवित्रता का संगम

पर्यावरण संरक्षण के लिए समर्पित गायत्री परिवार की बुरहानपुर शाखा अंत्येष्टि के लिए न केवल गोबर के कंडे उपलब्ध करा रही है, बल्कि जीवन के इस यज्ञ को पूरी तरह से पवित्र और संस्कारयुक्त बनाने की भी आदर्श पहल की गई है। अंत्येष्टि के लिए रथ तैयार किया गया

है। रथ के साथ विधि-विधान के साथ संस्कार कराने के लिए परिव्राजक भी भेजा जाता है। तुलसी की समिधा, गाय का घी, शुद्ध हवन सामग्री, देसी कपूर उपलब्ध कराया जाता है।

एक कार्यक्रम तीन आन्दोलन

पर्यावरण संरक्षण, गोसंवर्धन और स्वावलम्बन

खड़कोद स्थित गोलोक धाम की गौशाला में 200 और सारोला की माँ भगवती गौशाला में 100 गोवंश हैं, जिनके माध्यम से इस अभियान की पहल हुई है। एक व्यक्ति के अंत्येष्टि संस्कार में लगभग तीन क्विंटल कंडों की आवश्यकता होती है। तदनुसार कंडों से अंत्येष्टि की इस परम्परा से पर्यावरण की रक्षा तो होती ही है, गोबर के उपयोग से गौसंवर्धन को प्रोत्साहन मिल रहा है तथा कंडे बनाने के लिए लोगों को रोजगार भी मिल रहा है।

कथाकार मोहम्मद फैज खान ने भी सराहा

गाय के गोबर से अंत्येष्टि संस्कार की पवित्रता और उसकी सामाजिक उपयोगिता को समझते हुए स्थानीय कथाकार भी इस पुनीत परम्परा को अपनाने की प्रेरणा लोगों को दे रहे हैं। गौप्रेमी कथावाचक मोहम्मद फैज खान ने हनुमान जयंती पर हनुमान कथा कहते हुए गायत्री परिवार की इस परम्परा की प्रशंसा की थी।

आदिवासी मुरारी ने शराब और मांसाहार के प्रति अपने समाज को जागरूक करने का बीड़ा उठाया

हटा, दमोह। मध्य प्रदेश

हटा समीप ग्राम तेवरईया में आदिवासी समाज द्वारा पंच कुण्डीय यज्ञ के साथ नवरात्र साधना अनुष्ठान की पूर्णाहुति की गई। पंडित गिरधर पटेरिया जी ने सभी से देवदक्षिणा में अपनी बुराई त्यागने का आह्वान किया। इस अवसर पर एक अत्यंत सामान्य से आदिवासी मजदूर मुरारी ने आत्मग्लानि भरे शब्दों में मन के भाव व्यक्त किये। मुरारी ने कहा :-

मैंने 31 वर्ष पूर्व चित्रकूट अश्वमेध यज्ञ में दीक्षा ली थी, लेकिन अब तक शराब और मांसाहार से मुक्त नहीं हो पाया हूँ। अतः मैं प्रायश्चित्त करना चाहता हूँ।

परिजनों ने अपने घर यज्ञ कराकर पुनः दीक्षा लेने की प्रेरणा दी, लेकिन मुरारी ने बड़ी श्रद्धा के साथ अपने खरे पसीने की गाढ़ी कमाई भगवान के चरणों में अर्पित करते हुए अपनी ओर से प्रज्ञापीठ पर पंच कुण्डीय यज्ञ कराया। इसमें पुनः दीक्षा ली और देवदक्षिणा स्वरूप स्वयं ही नहीं, अपने पूरे आदिवासी समाज को नशा और मांसाहार की बुराई के प्रति जागरूक करने का संकल्प लिया।

पूर्व मंत्री एवं मध्य प्रदेश पिछड़ा आयोग के अध्यक्ष, गायत्री परिवार के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता डॉ. रामकृष्ण कुसमरिया ने मुरारी की श्रद्धा, समर्पण और त्याग की भावना तथा आदिवासी समाज तेवरईया के योगदान का हृदय से सम्मान किया। प्रज्ञापीठ प्रबंधक श्री रामस्वरूप दुबे, दुर्गा प्रसाद पटेल और दस गाँवों से आए श्रद्धालुओं ने इस यज्ञ में भाग लिया।

वनवासी उत्थान के संकल्प पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते राष्ट्रीय पिछड़ा आयोग के अध्यक्ष डॉ. रामकृष्ण कुसमरिया और यज्ञ में भाग लेते लोग

विद्यालयों में युग साहित्य की स्थापना

विधायक जी के सौजन्य से की जा रही है स्थापना

जबलपुर। मध्य प्रदेश

जबलपुर कैंट क्षेत्र के विधायक श्री अशोक रोहाणी जी के निवास पर परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का साहित्य गायत्री यज्ञ के साथ विधिवत रूप से स्थापित किया गया। इस अवसर पर गायत्री परिवार जबलपुर के साहित्य प्रचार-प्रसार प्रभारी श्री जगदीश दीक्षित ने बताया कि पुस्तक मेले में विधायक जी ने संकल्प लिया था कि वे अपने क्षेत्र के विद्यालयों में पूज्य गुरुदेव का साहित्य स्थापित कराएँगे। उसी संकल्प की पहली कड़ी के रूप में उन्होंने यह साहित्य अपने निवास पर स्थापित कराया है।

कार्यक्रम में प्रमुख प्रबंध ट्रस्टी श्री बी.बी. शर्मा जी ने आगामी 25 दिसंबर 2025 को प्रस्तावित 251 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ की जानकारी विधायक जी को दी। यज्ञ संचालन श्री नारायण दुबे जी द्वारा किया गया, वहीं युवा

यज्ञ करते विधायक श्री अशोक रोहाणी जी

प्रकोष्ठ से श्री संजय खत्री ने आयोजन की व्यवस्थाओं में सहयोग दिया। जिला समन्वयक श्री प्रेम शंकर तिवारी भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

हरित क्रांति के अग्रदूत: महेन्द्र जैन 'साथी'

62,000 वृक्षों की पौध रोपी, 20,000 पौधे बन चुके हैं वृक्ष

बक्सवाहा, छतरपुर। मध्य प्रदेश

छतरपुर जिले के बक्सवाहा तहसील निवासी महेन्द्र जैन 'साथी' पर्यावरण संरक्षण के एक जीवंत प्रतीक हैं। 1994 में अखंड ज्योति पत्रिका में प्रकाशित लेख से प्रेरित होकर आपने गायत्री परिवार के विचारों को आत्मसात किया और उसी वर्ष पर्यावरण जागरूकता के क्षेत्र में सक्रिय हो गए। जिला पर्यावरण समिति के सदस्य के रूप में दीवार लेखन, जनजागरण गोष्ठियों एवं रैलियों के माध्यम से पर्यावरण के प्रति व्यापक स्तर पर जनचेतना जागरण अभियान चलाते रहे हैं।

मध्य प्रदेश पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड द्वारा आपके लिखे पर्यावरण संबंधी 51 नारों को जिले भर में स्वीकृति मिली।

पर्यावरण मित्र श्री महेन्द्र जैन 'साथी' अब तक लगभग 62,000 पौधे रोप चुके हैं, जिनमें से 20,000 पौधे वृक्ष रूप में विकसित हो चुके हैं। वे समाजसेवियों के सहयोग से प्रतिवर्ष हजारों पौधे किसानों को निःशुल्क वितरित कर रोपण अभियान चला रहे हैं। इस वर्ष 10,000 पौधे 1,000 किसानों में वितरित करने का लक्ष्य है।

साथी जी केवल पर्यावरण सेवा तक सीमित नहीं हैं। वे नशा उन्मूलन, सामाजिक बुराइयों पर दीवार लेखन करने और मासिक नेत्र शिविरों के आयोजन में भी अग्रणी रहते हैं। एक कवि हृदय, जागरूक नागरिक और समर्पित कार्यकर्त्ता के रूप में वे आज की पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

सेवा-समर्पण का आदर्श प्रस्तुत करती डॉ. वैदेही पूरी

पांढुर्ना। मध्य प्रदेश

ग्राम मरकावाड़ा में कन्या किशोर कौशल अभिवर्धन शिविर आयोजित हुआ। इसमें डॉ. वैदेही पूरी की निःस्वार्थ सेवाओं ने सेवा-समर्पण का शानदार आदर्श प्रस्तुत किया। उन्होंने कन्या कौशल प्रशिक्षण के साथ निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाकर 150 से अधिक ग्रामीणों का स्वास्थ्य परीक्षण और उपचार किया। डॉ. वैदेही ने अपने पहले वेतन की पूरी राशि ₹72,000/- अपनी गुरुदक्षिणा और अंशदान के रूप में शान्तिकुञ्ज को समर्पित की।

डॉ. वैदेही इस शिविर की एक प्रमुख प्रशिक्षिका थीं। वे पांढुर्ना जिले की किशोरी बालिकाओं के सर्वांगीण विकास हेतु निरंतर मार्गदर्शन कर रही हैं। उनके प्रयासों से किशोरियों में आत्मविश्वास, कौशल बढ़ रहा है एवं जीवन निर्माण की प्रेरणा जाग्रत् हो रही है। वे नारी सशक्तीकरण का एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत कर रही हैं।

रेलवे स्टेशन पर जल सेवा केंद्र (प्याऊ)

जबलपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार जबलपुर विगत कई वर्षों से रेल यात्रियों को गर्मियों की तपिश से राहत देने के लिए रेलवे स्टेशन पर जल सेवा केन्द्र (प्याऊ) चला रहा है। इस वर्ष भी गायत्री परिवार द्वारा जबलपुर रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर 1 पर जल सेवा की जा रही है। प्रतिदिन यात्रा की थकान और गर्मी से परेशान हजारों यात्री इस प्याऊ से शीतल जल प्राप्त कर रहे हैं। इस जल सेवा से उन्हें मिलने वाले सुकून की अनुभूति बड़ी आनन्ददायी होती है।

नि:शुल्क बाँटा जा रहा है युग साहित्य

जल सेवा केन्द्र का उद्घाटन श्री प्रेमशंकर तिवारी ने गुरुदेव, माताजी एवं गायत्री माता का पूजन कर किया। इस सेवा कार्य में गोविंद यादव, अनिल सिंधिया, प्रेम नारायण बाथरे, रज्जन बनाफर, अरुण बनाफर, बी.एस. राजपूत, राजेश श्रीवास्तव, अर्चना व ज्योति श्रीवास्तव सहित अनेक परिजनों की सहभागिता है।

साहित्य वितरण भी

गायत्री परिवार के जल सेवा केन्द्र पर यात्रियों को जल के साथ-साथ पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा रचित अखंड ज्योति व अन्य युग निर्माण साहित्य भी निःशुल्क वितरित भी किया जा रहा है।

नियमित रूप से हो रहा है श्रद्धा और सद्विचारों का विस्तार

पाण्डुर्णा। मध्य प्रदेश : औद्योगिक क्षेत्र (ए.के.वी.एन. ग्रोथ सेंटर) रेमण्ड इकाई के वेस्टेड स्पिनिंग विभाग में रामनवमी के दिन गायत्री शक्तिपीठ सौंसर के मार्गदर्शन में माँ ताप्ती प्रज्ञा मंडल बोरगांव द्वारा गायत्री यज्ञ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभाग प्रमुख श्री गजानन नंदनवार एवं उनकी टीम के सदस्य श्री जय बर्मन, श्री संजीव सिन्हा, श्री विजय देवकर विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस क्षेत्र के लोगों की युग निर्माण आन्दोलन में गहरी आस्था है। क्षेत्र में अखंड ज्योति के 80, युग निर्माण योजना के 100 तथा प्रज्ञा अभियान पाक्षिक के 25 नियमित पाठक हैं। इन पत्रिकाओं के वितरण का कार्य सर्वश्री गोविंद सूर्यवंशी, कैलाश धोटे, राजेश मसने, दिनेश देशमुख, जयदेव बर्डे सहित अनेक गायत्री परिजनों के नियमित सहयोग से चल रहा है।

सद्वाक्य बोर्ड लगाया गया

रामनवमी के यज्ञीय वातावरण में वेस्टेड स्पिनिंग विभाग में एक सद्वाक्य बोर्ड की स्थापना भी की गई, जिस पर परम पूज्य गुरुदेव के सद्वाक्य और व्यसनमुक्ति संदेश लिखा जाता है।

अब आप 01334-311001 पर फोन कर शान्तिकुञ्ज की नई स्वचालित फोन व्यवस्था (आईवीआर) से शान्तिकुञ्ज के विभिन्न विभागों से सीधा सम्पर्क कर सकते हैं।

108 कुण्डीय यज्ञ में हुई वैज्ञानिक शोध

सिद्ध हुआ यज्ञ का सकारात्मक प्रभाव

भोपाल। मध्य प्रदेश : मंडीदीप औद्योगिक क्षेत्र में 13 से 16 जनवरी 2025 की तिथियों में विराट 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन हुआ था। उच्च शिक्षा विभाग एवं पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड के संयुक्त तत्त्वावधान में डॉ. संध्या त्रिवेदी ने इस यज्ञ के पर्यावरणीय एवं जैविक प्रभावों पर बड़े महत्त्वपूर्ण शोधकार्य किये हैं। डॉ. संध्या त्रिवेदी ने वल्लभ भवन सभागार, भोपाल में आयोजित एक कार्यक्रम में उच्च शिक्षा मंत्री माननीय श्री इंद्र सिंह परमार जी के समक्ष अपने शोधकार्य का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। डॉ. त्रिवेदी की यह शोध यज्ञ की उपयोगिता को वैज्ञानिक दृष्टि से प्रमाणित करती है।

यज्ञ से होता है-

- **हानिकारक बैक्टीरिया का नाश**
- **जल की संरचना में होता है सकारात्मक परिवर्तन**
- **बढ़ती है मिट्टी की ऊर्वरता**
- **मंत्रध्वनि से बढ़ती है ध्यान की प्रगाढ़ता**

डॉ. संध्या त्रिवेदी गायत्री तपोभूमि, मथुरा के जीवनदानी कार्यकर्त्ता एवं भोपाल के मूल निवासी श्री ईश्वरशरण पांडेय जी की पुत्रवधू हैं। उनका प्रयोगात्मक अध्ययन बताता है कि यज्ञ धूम्र के प्रभाव से हानिकारक बैक्टीरिया का नाश होता है, मिट्टी की ऊर्वरता बढ़ती है। जल की संरचना में सकारात्मक परिवर्तन तथा पर्यावरण शुद्धिकरण के प्रमाण स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुए। मंत्रों की ध्वनि से ध्यान की प्रगाढ़ता बढ़ी। शोध करने वाले वैज्ञानिक दल में डॉ. रुचिरा चौधरी, डॉ. उर्वशी सोनी, डॉ. अंजली आचार्य, डॉ. शैलजा दुबे, डॉ. अखिलेश शिडे एवं डॉ. प्रतिमा सम्मिलित रहीं।

भोपाल के वल्लभ भवन में आयोजित कार्यक्रम में मध्य प्रदेश के जोन समन्वयक श्री राजेश पटेल, श्री आर.के. गुप्ता सहित गायत्री परिवार के अनेक वरिष्ठ कार्यकर्त्ता उपस्थित रहे।

पहलगाम के पीड़ितों को श्रद्धांजलि

पहलगाम की घटना आत्मा पर आघात : स्वामी अखिलेश्वरानंद

जबलपुर। मध्य प्रदेश : पहलगाम में हुए निर्दोष नागरिकों के सामूहिक नरसंहार से व्यथित जबलपुर के परिजनों ने गायत्री शक्तिपीठ श्रीनाथ की तलैया से सिविक सेंटर तक मौन भर्त्सना यात्रा निकाली। तत्पश्चात् वंदे मातरम् चौक पर दीप जलाकर मृतात्माओं को श्रद्धांजलि दी गई।

कार्यक्रम में महामंडलेश्वर स्वामी श्री अखिलेश्वरानंद गिरि जी महाराज ने भी भाग लिया। उन्होंने इस घटना को राष्ट्र की आत्मा पर करारा प्रहार बताया और ऐसी नृशंस घटनाओं के विरुद्ध जनचेतना जगाने का आह्वान किया। सनातन धर्म महासभा के उपाध्यक्ष श्री शरद काबरा, समरसता सेवा संगठन के अध्यक्ष श्री संदीप जैन, पार्षद श्री कमलेश अग्रवाल एवं गायत्री परिवार के उपजोन प्रभारी श्री नरेश तिवारी ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालु व नागरिक शामिल हुए।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्री रमेश लक्ष्यकार, टीकमगढ़। मध्य प्रदेश

युग निर्माण आंदोलन के समर्पित देवात्मा श्री रमेश लक्ष्यकार का दिनांक 7 मार्च 2025 को 70 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे वर्ष 1970 में मथुरा से ही परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के प्रति समर्पित रहे। परिजनों ने उन्हें श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए मिशन के प्रति उनके समर्पण और भामाशाही योगदान को भावभरे अंतःकरण के साथ याद किया।

श्री ब्रजलाल सोनी, पवई, पन्ना। मध्य प्रदेश

ग्राम पंचायत विशानी, पवई के वरिष्ठ परिजन एवं सेवा निवृत्त प्राचार्य श्री ब्रजलाल सोनी का 88 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। स्व. श्री सोनी जी ने न केवल अपने परिवार को, बल्कि आसपास के समाज को भी सत्संस्कारों से जोड़ा। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुदामा देवी तथा समस्त परिवारीजन वर्षों से गायत्री परिवार से जुड़े हैं। उनके नाती सत्यम सोनी वर्तमान में मिशन के एक सक्रिय कार्यकर्त्ता हैं। ज्येष्ठ पुत्र श्री हजारीलाल सोनी (सेवानिवृत्त राजस्व निरीक्षक), मदन गोपाल, जितेन्द्र एवं सुभाष सोनी (शिक्षकगण) भी समाजसेवा में संलग्न हैं।

शान्तिकुञ्ज में सम्पन्न जबलपुर जिले का

युवा चेतना शिविर

शान्तिकुञ्ज में दिनांक 17 से 19 अप्रैल की तिथियों में जबलपुर जिले से आए लगभग 160 युवाओं के लिए विशेष युवा चेतना शिविर का आयोजन हुआ। शान्तिकुञ्ज के वरिष्ठ प्रतिनिधि डॉ. ओ.पी. शर्मा जी, श्री अशरणशरण श्रीवास्तव जी, युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री के.पी. दुबे जी श्री सदानंद अंबेकर जी एवं श्री आशीष सिंह जी ने इन युवाओं का बड़े विस्तार से मार्गदर्शन किया।

इस शिविर में आधे से अधिक युवा मिशन से नए जुड़े थे। उन्हें परम पूज्य गुरुदेव का जीवन दर्शन, सप्त आंदोलन, युवा आंदोलन, युग निर्माण योजना, उपासना-साधना-आराधना, बाल संस्कारशाला अभियान आदि विषयों की जानकारी दी गई। अनेक भाई-बहिनों ने बाल संस्कारशाला संचालन, पर्यावरण संरक्षण, व्यसन मुक्ति कार्यक्रम में समयदान करने का संकल्प लिया। युवा प्रकोष्ठ, शान्तिकुञ्ज के श्री अरविंद यादव एवं दिव्य मोहन सिंह का व्यवस्थापरक सहयोग रहा।

कन्या किशोर कौशल अभिवर्धन कार्यशाला

250 प्रतिनिधियों ने भाग लिया

सिवनी। मध्य प्रदेश : सिवनी जिले में दिनांक 9 मार्च 2025 को कन्या किशोर कौशल अभिवर्धन अभियान की जिला स्तरीय प्रशिक्षक कार्यशाला आयोजित हुई। बहिनों ने शंखनाद के साथ इसका शुभारंभ किया। कार्यशाला में बरघाट, छपारा, धनौरा, घंसौर, कुरई एवं लखनादौन तहसीलों के प्रज्ञापीठों व शक्तिपीठों से आए 250 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का प्रभावशाली संचालन सुश्री राहंगडाले ने किया।

जिला समन्वयक श्री रामसिंग राहंगडाले की प्रमुख उपस्थिति में उपजोन कार्यवाहक श्री किशोर किनकर, प्रशिक्षक श्री नरेंद्र हिंगवे, सहकार्यवाहक श्रीमती अनीता राउत, अभियान कार्यवाहक श्री हेमराज बघेल, सहकार्यवाहक श्रीमती अनुराधा चंद्रवंशी, तकनीकी सहायक श्री शाश्वत सोलंकी, केवलारी से साहू बहिन और छिंदवाड़ा से कई वरिष्ठ बहिनों ने कार्यक्रम में विशेष सहभागिता निभाई और अंत में सभी तहसीलों में भी इसी तरह के शिविर का आयोजन करने का संकल्प लिया गया।

बाल व्यक्तित्व विकास शिविर

ग्वालियर। मध्य प्रदेश : गायत्री जागृति केंद्र, सुभाष नगर, हजीरा में 9 से 18 अप्रैल तक नौ दिवसीय बाल व्यक्तित्व विकास प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इसमें 90 बच्चों ने भाग लिया।

शिविर का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्री गोपाल सिंह चौहान एवं श्री श्याम सिंह तोमर द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। शिविर संयोजक भक्त दर्शन बारोलिया ने बच्चों को यज्ञ, श्लोक व हवन विधि का प्रशिक्षण दिया। वरिष्ठ कार्यकर्त्ता अन्नपूर्णा सेंगर ने पंचतंत्र जैसी अनेक प्रेरक कथाएँ सुनाईं। गायत्री मंत्र उच्चारण व जप का अभ्यास डॉक्टर सौम्या गुप्ता व अनंत चतुर्वेदी ने कराया।

शिविर के समापन अवसर पर उपजोन प्रभारी पं. डीपी लवानिया व जिला समन्वयक श्री बलबीर सिंह परिहार ने बच्चों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किए। श्री लाल बहादुर सिंह के अनुसार सभी बच्चों को गायत्री चालीसा व गायत्री मंत्र का नियमित पाठ करने का संकल्प दिलाया गया।

गोपाल सिंह चौहान ने सभी बच्चों को प्रशिक्षण सामग्री निःशुल्क उपलब्ध कराकर प्रशंसनीय योगदान दिया। समापन कार्यक्रम में अभिभावक व कार्यकर्त्ता बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

ग्वालियर में आयोजित नौ दिवसीय व्यक्तित्व परिष्कार शिविर में भाग ले रहे बच्चे

शक्तिपीठ का स्थापना दिवस

ज्योति कलश यात्रा संचालन के लिए उत्साहभरा वातावरण बना

परिजनों को नवयुग सृजन के लिए प्रोत्साहित करते श्री रामशरण ब्रह्मचारी

दलौदा, मंदसौर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ दलौदा सगरा ने चार दिवसीय 9 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथा आयोजन के साथ शक्तिपीठ का स्थापना दिवस मनाया। प्रज्ञा पुराण कथा में तीनों दिन भारी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित मिशन के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री रामशरण ब्रह्मचारी जी एवं दलौदा सगरा में अध्यापक रहे श्री पुरनचंद गहलोत जी ने आत्म निवेदन से सभी श्रद्धालुओं और कर्मठ कार्यकर्त्ताओं को युगऋषि श्रीराम के हनुमान बनकर नवयुग के निर्माण में गरिमापूर्ण भागीदारी करने की प्रेरणा दी।

> युगऋषि श्रीराम के हनुमान बनकर नवयुग के निर्माण में गरिमापूर्ण भागीदारी करें।
> – श्री रामशरण ब्रह्मचारी

कार्यक्रम में जिला समन्वयक श्री मोहनलाल जोशी ने पूरे मई माह में जिले में ज्योति कलश यात्रा निकाले जाने और उससे संबंधित कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की। ज्योति कलश यात्रा के संचालन में विशिष्ट योगदान देने वाले दलौदा के श्री कैलाश शर्मा, मंदसौर के श्री बी.के. विजयवर्गीय तथा श्री नरेश त्रिवेदी को मंच से सम्मानित किया गया। कई साधकों ने जन्मशताब्दी के निमित्त विशेष अनुष्ठान करने का संकल्प भी लिया।

51 कुंडीय गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथा

सबलगढ़ मुरैना। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार शाखा सबलगढ़ में 30 मार्च से 3 अप्रैल 2025 तक की तिथियों में 51 कुंडीय गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथा का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम सम्पन्न कराने शान्तिकुञ्ज से श्री परमेश्वर साहू की टोली आई थी। सरस भावपूर्ण कथा के माध्यम से मिले व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं के समाधानों ने श्रोताओं को बहुत प्रभावित किया।

इस कार्यक्रम में युगशक्ति गायत्री के प्रति लोगों की अपार आस्था के भव्य और दिव्य दर्शन हुए। दीपयज्ञ में हजारों भाई-बहिनों ने भाग लिया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव के क्रान्तिकारी विचार जीवन को नित नवीन ऊँचाई पर प्रतिष्ठित करते हैं। उनके विचार जन-जन के मन और जीवन को प्रकाशित कर रहे हैं। दीपयज्ञ ऐसा ही प्रकाशित जीवन जीने का संदेश देता है।

यज्ञ में 19 गुरुदीक्षा सहित कई अन्य संस्कार सम्पन्न हुए। कार्यक्रम में कैलारस, जोरा, मुरैना, पोरसा व ग्वालियर से बड़ी संख्या में आए श्रद्धालुओं की भागीदारी रही। कैलारस शाखा द्वारा आगामी 5 कुंडीय यज्ञ का संकल्प लिया गया। दीपयज्ञ की दिव्य छटा सभी श्रद्धालुओं के अंतःकरण में अलौकिक दिव्यता का संचार करती रही। इस महायज्ञ में ग्वालियर उपजोन प्रभारी श्री डी.पी. लवानिया, मुरैना जिला समन्वयक श्री पी.आर. शर्मा व महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती शारदा शर्मा की उपस्थिति ने परिजनों को उत्साह से भर दिया।

चन्दन स्वयं घिसकर सुगन्ध देता है, भले मनुष्यों का यही काम है।

प्रज्ञा अभियान के माध्यम से युग चेतना का व्यापक विस्तार

उभर रहे हैं उत्साहवर्धक संकल्प

राजस्थान में अग्रणी है जोधपुर जिला

एक ही गोष्ठी में 200 सदस्य बने, 1000 का लक्ष्य पूरा हुआ

जोधपुर में दिव्य ज्योति कलश रथ यात्रा के अनुयाज हेतु एक विशेष गोष्ठी का आयोजन हुआ। इस गोष्ठी में राजस्थान जोन प्रभारी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री गौरीशंकर सैनी एवं श्री जे.पी. चौधरी तथा राजस्थान के जोन समन्वयक श्री ओमप्रकाश अग्रवाल जी उपस्थित थे।

श्री सैनी जी के प्रेरणादायी आह्वान पर सभी ने मिलकर जोधपुर में प्रज्ञा अभियान पत्रिका के अधिकाधिक पाठक बनाने का संकल्प लिया। संकल्प को तत्काल प्रभावी बनाते हुए उपस्थित भाई-बहिनों ने 200 प्रतियों हेतु 16,000 रुपये की धनराशि तत्काल एकत्रित कर जमा करवा दी। गोष्ठी में जिला समन्वयक, तहसील समन्वयक, प्रज्ञा मण्डल, युवा मण्डल, महिला मण्डल, नवचेतना एवं विस्तार केंद्रों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

अब फलौदी में भी

जोधपुर जिले में मात्र 60 दिनों में 1000 से अधिक सदस्य बने हैं। इन दिनों ज्योति कलश यात्रा फलौदी जिले में भ्रमण कर रही है। श्री जे.पी. शर्मा जी ने प्रज्ञा अभियान की सदस्यता के लिए जो कार्य जोधपुर में किया, वही अब फलौदी जिले में भी कर रहे हैं।

लक्ष्य 1000 पार

गुजरात के भरूच जिले में नितिनभाई एवं समस्त शक्तिपीठ परिवार ने जिले की प्रत्येक पंचायत और तालुका तक प्रज्ञा अभियान पहुँचाने का संकल्प लिया है। उन्होंने न्यूनतम 1000 का लक्ष्य पार करते हुए पाक्षिक के सदस्यों की संख्या 1073 तक पहुँचा दी है।

इस संकल्प को पूरा करने में विशेष योगदान श्री बलदेवभाई सोनी जी के सुपुत्र श्री भावेशभाई सोनी का है, जिन्होंने अपने संसाधनों से 375 पाठकों हेतु राशि शान्तिकुञ्ज को भेज दी।

विधायक का योगदान

शिवपुरी के डॉ. खरे जी की प्रेरणा से कोलारस, शिवपुरी के विधायक श्री महेंद्र सिंह यादव जी ने अपने क्षेत्र में गायत्री परिवार की विचारधारा को फैलाने के लिए 100 प्रज्ञा अभियान की सदस्यता हेतु अंशदान दिया।

प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ की नयी पहल

जहानाबाद, बिहार की प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ शाखा ने लगभग 200 सप्ताह से चले आ रहे साप्ताहिक वृक्षारोपण अभियान के साथ पाक्षिक प्रज्ञा अभियान के माध्यम से व्यक्तित्व निर्माण का प्रयास भी तेज कर दिया है। श्री श्याम नारायण कुमार जी एवं जिला समन्वयक अरविंद जी (हरी जी) ने शान्तिकुञ्ज की प्रथम प्रेरणा से ही 151 पाठकों तक प्रज्ञा अभियान पहुँचाना आरंभ कर दिया है।

गर्भवती माताओं के लिए

रामपुर बघेलान, जिला सतना, मध्य प्रदेश में 25 गर्भवती माताओं का पुंसवन संस्कार संपन्न कराया गया। गायत्री परिवार ने परम पूज्य गुरुदेव के विचारों से जोड़े रखने के लिए उन सभी बहिनों और स्वास्थ्य केंद्र के स्टाफ तक नियमित रूप से प्रज्ञा अभियान पहुँचाने का निर्णय लिया है।

एक गोष्ठी, 1026 सदस्य

जनपद सुल्तानपुर (उत्तर प्रदेश) में उपजोन प्रभारी श्री कैलाश नारायण तिवारी, जिला समन्वयक डॉ. सुधाकर सिंह, संगठन प्रभारी श्री राकेश प्रताप सिंह, श्री रंजीत बहादुर सिंह, अमेठी के जिला समन्वयक डॉ. त्रिवेणी सिंह एवं सभी ब्लॉक प्रभारियों की मुख्य उपस्थिति में जिला स्तरीय बैठक दिनांक 27 अप्रैल 2025 को आयोजित हुई। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने फोन के माध्यम से संबोधित करते हुए उपस्थित श्रद्धालुओं को युग निर्माण आन्दोलन में प्रज्ञा अभियान की उपयोगिता समझायी। परिजनों ने अनुभव किया कि परम पूज्य गुरुदेव के विचार और उनके मिशन को घर-घर तक पहुँचाने का सबसे सस्ता और अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है प्रज्ञा अभियान। इस गोष्ठी का लोगों पर यह प्रभाव पड़ा कि उन्होंने पाक्षिक प्रज्ञा अभियान के 1026 नए सदस्यों की सूची तत्काल शान्तिकुञ्ज को भेज दी।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा 2024 के

पुरस्कार वितरण एवं सम्मान समारोह

रीवा। मध्य प्रदेश : रीवा में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का पुरस्कार वितरण समारोह हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रदेश व जिला स्तर पर प्रथम तीन वरीयता प्राप्त विद्यार्थियों को नकद पुरस्कार, प्रमाण पत्र एवं गुरुदेव का साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री मिहिर पांडेय, प्राचार्य जवाहरलाल नेहरू तकनीकी कॉलेज, रीवा ने अपने संदेश में विद्यार्थियों से जीवन में नैतिक मूल्यों को आत्मसात करने का आह्वान किया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्रीमती संध्या तिवारी जी ने परीक्षा को बच्चों के चरित्र निर्माण की दिशा में प्रभावी कदम बताया।

कार्यक्रम में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के जिला संयोजक विनोद पांडेय, अभिमन्यु सिंह, पी.एल. सेन, एस.पी. मिश्रा, प्रमोद सिंह ने विशिष्ट भूमिका निभाई। जिले में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के आयोजन में गायत्री परिवार के समर्पित कार्यकर्त्ताओं का प्रशंसनीय योगदान रहा।

रीवा जिले की उपलब्धियाँ

- रीवा जिले के 13,695 छात्र-छात्राएँ भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में शामिल हुए।
- रीवा जिले के तीन विद्यार्थी प्रादेशिक वरीयता सूची में शामिल हुए।
- यह परीक्षा विद्यार्थियों को अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में भी लाभदायक सिद्ध हो रही है।

इस समारोह में गायत्री परिवार की विशिष्ट प्रतिभाओं को भी सम्मानित किया गया। इस क्रम में गोल्ड मेडलिस्ट डॉ. आशय द्विवेदी, सीडीएस परीक्षा में क्रमशः 13वाँ और 15वाँ स्थान प्राप्त करने वाले अभिषेक तिवारी व पियूष शुक्ला सम्मानित किए गए।

विद्यार्थियों को व्यसन व फैशन मुक्त जीवन जीने का संकल्प दिलाया गया

शिक्षक व प्राचार्य भी सम्मानित

शाजापुर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ शाजापुर में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का जिला स्तरीय पुरस्कार वितरण एवं शिक्षक सम्मान समारोह गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। जिसमें शाजापुर एवं आगर जिलों के तहसील व जिला स्तर पर वरीयता प्राप्त विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया तथा परीक्षा के आयोजन में सहयोगी शिक्षकों-प्राचार्यों को सम्मानित किया गया।

इस समारोह ने विद्यार्थियों को अपनी महान संस्कृति के अनुरूप आदर्श जीवन जीने की प्रेरणाएँ दीं। मुख्य अतिथि विक्रम विश्वविद्यालय

कुलगुरु डॉ. अर्पण भारद्वाज वरीयता प्राप्त विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए

उज्जैन के कुलगुरु डॉ. अर्पण भारद्वाज थे। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति के स्वर्णिम सूत्रों से जोड़ना उनके उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करता है। विशेष अतिथि डॉ. उमेश सिंह, समाजसेवी श्री गोविंद कराड़ा एवं जिला समन्वयक श्री राकेश परमार ने विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ दीं।

गायत्री परिवार की ओर से शिक्षा आंदोलन म.प्र. समन्वयक श्रीयुत् श्रीकृष्ण शर्मा ने प्रेरक कहानियों के माध्यम से जीवन निर्माण के सूत्र समझाए। प्रांत प्रतिनिधि श्री अशोक सलोकिया ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। विद्यार्थियों को व्यसन व फैशन मुक्त जीवन जीने का संकल्प दिलाया गया। संचालन श्री शैलेन्द्र श्रीवास्तव एवं आभार प्रदर्शन ट्रस्टी श्री प्रदीप कुमार वैद्य ने किया।

राजस्थान 15 लाख विद्यार्थी शामिल करेगा

जयपुर। राजस्थान : भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रभारी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री रामयश तिवारी की उपस्थिति में जयपुर में दिनांक 23 अप्रैल को एक राज्य स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। यह गोष्ठी वर्ष 2025 की कार्ययोजना और लक्ष्य के निर्धारण के लिए आयोजित की गई थी। इस संगोष्ठी में प्रदेश भर के शिक्षाविदों और गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया।

श्री रामयश तिवारी जी ने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा की प्रभावशीलता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार इस परीक्षा के माध्यम से लाखों बच्चों में व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय मूल्यों की पुनर्स्थापना कर रहा है। इस कार्य में शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। हमारा लक्ष्य सन् 2026 तक लगभग 2000 शिक्षकों को प्रशिक्षित कर गायत्री परिवार से जोड़ना है, ताकि वे युवाओं तक ऋषि प्रणीत जीवन मूल्यों को पहुँचा सकें।

7 नवम्बर को होगी परीक्षा

• भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के प्रांतीय संयोजक श्री रमाकांत अमेटा ने वर्ष 2025 में 7 नवंबर को परीक्षा का आयोजन किये जाने और पूरे राजस्थान से 15 लाख विद्यार्थियों को परीक्षा में शामिल किये जाने के लक्ष्य से अवगत कराया।

जिला शिक्षा अधिकारी का संकल्प

• डूंगरपुर के शिक्षा अधिकारी श्री हर्षित जी ने गायत्री परिवार के इस अभियान की सराहना करते हुए अपने जिले से 1 लाख विद्यार्थियों को परीक्षा में बैठाने का संकल्प लिया।

मिशन मोड में जुट जायें

• गायत्री परिवार राजस्थान प्रभारी श्री ओमप्रकाश अग्रवाल ने सभी जिला प्रभारियों को पूर्ण समर्पण के साथ मिशन मोड में कार्य करने का संकल्प दिलाया, जिससे लक्ष्य को निश्चित रूप से प्राप्त किया जा सके।

भा.सं. ज्ञान परीक्षा पर जागरूकता कार्यक्रम

पुस्तक प्रदर्शनी लगाई

रुद्रपुर, उधम सिंह नगर। उत्तराखंड

दिनांक 23 अप्रैल 2025 को विश्व पुस्तक दिवस के उपलक्ष्य में रुद्र पब्लिक स्कूल जयनगर, रुद्रपुर में गायत्री परिवार द्वारा भव्य पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में किड्स पैराडाइज पब्लिक स्कूल एवं संस्कृति पब्लिक स्कूल के छात्रों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के उधम सिंह नगर

रुद्रपुर में विद्यार्थियों को आकर्षित करता युग साहित्य

संयोजक श्री यशवंत सिंह ने विद्यार्थियों को गायत्री परिवार के उद्देश्यों और भारतीय संस्कृति की महानता से अवगत कराया।

गायत्री परिवार के प्रयास प्रभावशाली रहे। बच्चों ने परम पूज्य गुरुदेव की लिखी पुस्तकों को बड़े उत्साह से देखा और खरीदा भी। कार्यक्रम में अनुज अग्रवाल, नमोनारायण शर्मा सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। विद्यालय प्रबंधन ने गायत्री परिवार के प्रयासों की सराहना की।

कार्यक्रम में मतदाता जागरूकता अभियान भी चलाया गया तथा छात्रों को नवयुग सत्संकल्प-18 सूत्रों को जीवन में अपनाने की शपथ दिलाई गई।

गृहे-गृहे यज्ञ अभियान : 225 घरों में यज्ञ हुए

अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार अलीराजपुर द्वारा गृहे-गृहे 'गायत्री यज्ञ-उपासना' अभियान के अंतर्गत 13 अप्रैल 2025 (रविवार) को पूरे जिले में यज्ञीय कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जिले में कुल 225 घरों में बड़े श्रद्धाभाव के साथ गायत्री यज्ञ सम्पन्न किए गए। तहसील अलीराजपुर में 40, नानपुर में 12, जोबट में 37, बोरी में 5, भाबरा में 5, कट्ठीवाड़ा में 11, सोंडवा में 22 और छकतला में 86 घरों में यज्ञ हुआ।

जिला समन्वयक श्री संतोष वर्मा ने बताया कि जिला संगठन ने हर माह के दूसरे रविवार को आयोजित की जाने वाली गृहे-गृहे यज्ञ की इस योजना को और भी प्रभावशाली एवं अधिक व्यापक बनाने का संकल्प दोहराया है। इसके माध्यम से क्षेत्र में संस्कार, स्वास्थ्य और पर्यावरण शुद्धि का संदेश दिया जा रहा है। यज्ञों के माध्यम से नकारात्मक ऊर्जा का शमन और वातावरण में आध्यात्मिक चेतना का संचार हो रहा है।

सुख के पीछे मत दौड़ो। वह मृगतृष्णा की तरह है, जो हाथ न आ सकेगा। केवल कर्तव्य को पकड़ो। जो उचित है, उसे करना पर्याप्त समझो। संतोष के रूप में सच्चा सुख तुम्हें अनायास ही मिल जाएगा। -अरस्तु

ऑस्ट्रेलिया में हजारों परिवारों पर स्नेह-सिंचन कर लौटे शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

ज्योति कलश यात्रा पहुँची, जन्मशताब्दी वर्ष में सक्रियता का अथाह उल्लास छाया

सिडनी में ज्योति कलश का प्रथम पूजन

मेलबर्न में विकसित होते युगसृजेताओं पर स्नेहवर्षा

प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन के मंच पर एडीलेड के कर्मठ, उत्साही कार्यकर्त्ताओं की टीम

सारे विश्व में परम पूज्य गुरुदेव के विचार और युग निर्माण आन्दोलन का विस्तार करने वाले अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा युगनायक, देव संस्कृति विवि. के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का 15 अप्रैल से 27 अप्रैल 2025 तक ऑस्ट्रेलिया का बड़ा महत्त्वपूर्ण प्रवास रहा। इस प्रवास में सिडनी, ब्रिसबेन, कैनबरा, मेलबर्न, एडीलेड और पर्थ में उनके अनेक कार्यक्रम हुए।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी जन्मशताब्दी वर्ष के निमित्त ज्योति कलश लेकर ऑस्ट्रेलिया पहुँचे थे। सिडनी में प्रथम पूजन के साथ ज्योति कलश यात्रा आरंभ हुई। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों ने हर शहर में आवश्यक मार्गदर्शन एवं उत्साहवर्धन करते हुए ऑस्ट्रेलिया के हर शहर में दिव्य ज्योति कलश के सान्निध्य में साधना अभियान चलाने, गुरुदेव के विचार पहुँचाने, युग निर्माण सत्संकल्प के पाठ का प्रचलन बढ़ाने पर जोर दिया।

इस प्रवास में प्रायः सभी नगरों में प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन, गणमान्यों से मुलाकात, विशाल दीपयज्ञ और सभाओं-संगोष्ठियों का क्रम रहा, टेलीविजन और रेडियो पर साक्षात्कार हुए। घर-घर पहुँचकर नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं व भावनाशील परिजनों पर स्नेह सिंचन इस प्रवास की सबसे बड़ी उपलब्धि रही। शान्तिकुञ्ज से ऑस्ट्रेलिया की प्रव्रज्या पर गई श्री श्याम बिहारी दुबे, श्री गणेश पंवार, श्री हरिप्रसाद चौधरी एवं श्री गोपाल कृष्ण शर्मा की टीम का इन कार्यक्रमों की सफलता में योगदान रहा।

घर-घर गए, हजारों लोगों से मिले

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने अपने ऑस्ट्रेलिया के पूरे प्रवास में सभी शहरों में जनसंपर्क एवं श्रद्धासंवर्धन का विशेष ध्यान रखा। प्रवास के छः शहरों में 100 से अधिक परिजनों के घर वे गए, प्रत्येक घर में कई-कई परिवारों के लोगों से मुलाकात हुई।

परिजनों की युग निर्माणी आस्था और मिशन के प्रति उनका समर्पण भाव देखते ही बनता था। सात समुंदर पार शान्तिकुञ्ज के सान्निध्य की अनुभूतियाँ लोगों के मनों में हिलोरें लेती दिखाई दीं। अनेक परिवारों और परिजनों ने परम पूज्य गुरुदेव, परम वंदनीया माताजी, श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी, श्रद्धेया शैल जीजी तथा शान्तिकुञ्ज से जुड़ी भाव स्मृतियों के संस्मरण सुनाए, उनसे जुड़े फोटो और वीडियो दिखाकर गद्गद हुए। घर-घर में लोगों की पूजास्थली में आराध्य देव के रूप में प्रतिष्ठित गुरुदेव-माताजी के दर्शन भाव विभोर कर देने वाले थे। कई घरों में पूजन, आरती का क्रम भी सम्पन्न हुआ।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने इस प्रवास में सभी स्वजनों की कुशलक्षेम जानी। मिशन के नींव के पत्थरों से मिलकर उनका उत्साह वर्धन किया। नन्हें बच्चों को गोद में लेकर, उनके सिर पर हाथ फेर कर अपना स्नेह दुलार देते हुए सद्गुणी, संस्कारवान बनने तथा जीवन में महानता की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

इस जनसंपर्क अभियान ने शान्तिकुञ्ज के दर्शन करने के इच्छुक सैकड़ों परिजनों की आस्था और जिज्ञासा को कई गुना बढ़ा दिया। घर-घर देवस्थापना का क्रम रहा। उन्हें नित्य पाठ के लिए युग निर्माण सत्संकल्प पत्रक दिए गए और ज्योति कलश के दिव्य प्रकाश को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाते हुए जन्मशताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी करने का आमंत्रण दिया गया।

साधकों के व्यक्तित्व और समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन लायेगी ज्योति कलश यात्रा। - डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

दिव्य ज्योति कलश का भव्य स्वागत
वरुण देव ने किया अभिसिंचन

सिडनी में कार्यक्रम शृंखला का शुभारंभ कार्यकर्त्ता गोष्ठी से हुआ। इस गोष्ठी से जन्मशताब्दी वर्ष के निमित्त निकाली जा रही ज्योति कलश यात्रा का ऑस्ट्रेलिया में भी शुभारंभ हो गया है। युग परिवर्तन की दस्तक देने ऑस्ट्रेलिया पहुँचे दिव्य ज्योति कलश का नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं और अपनी संस्कृति के प्रति श्रद्धावान परिजनों ने तो हार्दिक स्वागत किया ही, प्रकृति भी दिव्य चेतना के स्वागत में पीछे नहीं रही। जब शक्ति कलश सिडनी पहुँचा, तब वरुण देवता अपनी नन्हीं-नन्हीं बूंदों से उसका अभिसिंचन कर रहे थे।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने ज्योति कलश का विधिवत पूजन किया। उन्होंने ज्योति कलश यात्रा के प्रयोजन और पूरे ऑस्ट्रेलिया में यात्रा के संचालन की कार्ययोजना समझायी। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने कहा कि ज्योति कलश यात्रा लोगों को गायत्री उपासना से अपने व्यक्तित्व को निखारने की प्रेरणा देने की यात्रा है। इस यात्रा के माध्यम से अखण्ड ज्योति का प्रकाश जन-जन तक पहुँचेगा, साधकों के व्यक्तित्व और समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन लायेगा।

युग निर्माण सत्संकल्प

संगोष्ठी के अंत में सभी ने समवेत स्वर में युग निर्माण सत्संकल्प का पाठ किया। इस अवसर पर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने परम पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित युग निर्माण सत्संकल्प की व्याख्या नवयुग के संविधान के रूप में की। उन्होंने कहा कि विश्वमानवता का उज्ज्वल भविष्य इन विचारों में निहित है। हमें हर व्यक्ति, हर संस्था, हर धर्म-सम्प्रदाय के लोगों तक इन विचारों को पहुँचाना होगा।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी सिडनी में आयोजित प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन को संबोधित करते हुए

'ह्यूमन एक्सीलेंस' पर उद्बोधन

सिडनी के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं कॉलेजों के युवाओं के मध्य 'ह्यूमन एक्सीलेंस' विषय पर व्याख्यान रखा गया था। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने उन्हें जीवन की सार्थकता का मर्म बताया, सेवा-संवेदना के साथ जीवन को सँवारने की प्रेरणाएँ दीं। प्रश्नोत्तरी के क्रम में श्रोताओं की आध्यात्मिक जिज्ञासाओं का समाधान किया।

बचपन से गायत्री परिवार की बाल संस्कार शालाओं में प्रशिक्षित एवं वर्तमान में उच्च शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवाओं ने अग्रजों के मार्गदर्शन में इस कार्यक्रम के आयोजन में विशिष्ट भूमिका निभाई। डॉ. चिन्मय जी से अपने उज्ज्वल भविष्य के रोड मैप के संबंध में मार्गदर्शन प्राप्त कर वे कृतकृत्य हुए। युवाओं ने जन्मशताब्दी वर्ष 2026 के कार्यक्रमों की जिम्मेदारियों को पूरे उत्साह और श्रद्धा के साथ पूरा करने का आश्वासन दिया।

तीर्थ पुरोहितों से भेंट व चर्चा

ऑस्ट्रेलिया में सेवारत अतिविशिष्ट तीर्थ पुरोहितों ने आद. चिन्मय पण्ड्या जी से भेंट की। उनके साथ भारतीय संस्कृति की गौरव-गरिमा की पुनःस्थापना के लिए गायत्री परिवार द्वारा किये जा रहे कार्यक्रमों तथा परम पूज्य गुरुदेव के युग निर्माण के महान लक्ष्य के संदर्भ में चर्चा हुई। डॉ. चिन्मय जी ने उन्हें मानवता की भलाई के लिए गायत्री परिवार के साथ मिलकर कार्य करने का आमंत्रण दिया।

लॉर्ड मेयर श्री समीर पांडे जी ने अपने गुरुद्वारे शान्तिकुञ्ज को नमन किया

सिडनी में जनसेवा के क्षेत्र में सक्रियता से जुटे पैरामेटा के लॉर्ड मेयर श्री समीर पांडे जी गायत्री परिवार से बचपन से जुड़े हैं। वे अपने माता-पिता की प्रेरणा से ज्ञानरथ चलाया करते थे। उन्होंने आदरणीय डॉ. चिन्मय जी से भेंट कर अपने अनुभव और संस्मरण साझा किये। इससे पूर्व उन्होंने शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का बड़ी आत्मीयता के साथ स्वागत-अभिनंदन करते हुए अपने गुरुद्वारे की दिव्य चेतना को बारम्बार नमन किया।

दीप महायज्ञ एवं प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन

न्यू साउथ वेल्स की राजधानी सिडनी में दीप महायज्ञ एवं प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन सम्पन्न हुआ। पूरे प्रान्त के उद्योगपति, वैज्ञानिक, जनसेवक, विविध संगठनों के प्रमुख, नगर के प्रभावशाली गणमान्य व्यक्ति एवं गायत्री परिजनों की इसमें भागीदारी रही। इस अवसर पर आद. डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने श्रोताओं को मानव जीवन की गरिमा का बोध कराया। उनके बीच जन्मशताब्दी वर्ष 2026 की योजनाओं की विस्तृत चर्चा हुई। महाकालस्वरूप परम पूज्य गुरुदेव की युग निर्माण योजना से जुड़कर गायत्री परिवार की नवसृजन की गतिविधियों में भाग लेते हुए जीवन को धन्य बनाने हेतु आमंत्रण दिया गया। सभी से युग निर्माण सत्संकल्प का सामूहिक पाठ कराया गया।

उपरोक्त कार्यक्रमों के कुछ चित्र और शेष समाचार पृष्ठ 7 पर...

ऑस्ट्रेलिया के प्रथम गायत्री चेतना केन्द्र निर्माण के लिए भूमिपूजन

जन्मशताब्दी वर्ष 2026 में पावन गुरुसत्ता को विशेष श्रद्धाञ्जलि के रूप में सिडनी में गायत्री चेतना केन्द्र का निर्माण होने जा रहा है। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने परिजनों के सम्मिलित पुरुषार्थ से बनने जा रहे ऑस्ट्रेलिया के इस प्रथम चेतना केंद्र का भूमिपूजन किया। डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि यह चेतना केन्द्र ऑस्ट्रेलिया में गायत्री परिवार के विस्तार की दृष्टि से एक मील का पत्थर है। उपस्थित नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं ने इस केन्द्र के माध्यम से संगठन और सृजनात्मक आन्दोलनों को गति देने का संकल्प लिया।

सिडनी में भूमिपूजन-वृक्षारोपण करते डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

डिजिटल मीडिया 'वॉइस आजकल' पर साक्षात्कार

सुप्रसिद्ध ऑस्ट्रेलियन डिजिटल मीडिया हाउस 'वॉइस आजकल' ने आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का साक्षात्कार लिया। ऋषियुग्म के जीवन परिचय, युग निर्माण अभियान के लक्ष्य, उद्देश्य एवं वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता जैसे विषयों पर चर्चा हुई। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने अध्यात्म और वर्तमान परिस्थितियों से संबंधित अनेक जिज्ञासाओं का समाधान किया। इस साक्षात्कार ने सम्पूर्ण ऑस्ट्रेलिया में ज्योति कलश यात्रा, जन्म शताब्दी वर्ष 2026 एवं युग निर्माण सत्संकल्प अभियान की जानकारी पहुँचाई।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी वॉइस आजकल से बात करते हुए

यदि आपके सौ मित्र हैं तो कम हैं, उन्हें और बढ़ाओ। यदि आपका एक शत्रु है तो बहुत ज्यादा है, उसे घटाओ।

ऑस्ट्रेलिया के प्रमुख शहरों में दिया जन्मशताब्दी का संदेश

ब्रिसबेन अश्वमेध नगरी में भक्तिभाव का संचार

ब्रिसबेन में आयोजित प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन में शान्तिकुञ्ज की आत्मीयता और प्रेरणाओं से भावविभोर हुए परिजन

सिडनी में विचार क्रान्ति की लाल मशाल प्रज्वलित करने के पश्चात् शान्तिकुञ्ज की टोली 18 अप्रैल को प्रातः ऐतिहासिक अश्वमेध यज्ञ की साक्षी क्वींसलैंड की राजधानी ब्रिसबेन पहुँची। अश्वमेध की स्मृतियों को सँजोए परिजनों के लिए ऋषियुग्म के अंशधर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का शुभागमन अत्यंत ही भावुक कर देने वाला था। ब्रिसबेन में प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन एवं दीपयज्ञ का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में ब्रिसबेन के अलावा सुदूर क्षेत्रों से बड़ी संख्या में परिजन पधारे थे।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने उन्हें अपने दीपक स्वयं बनने एवं अखंड दीपक, परम वंदनीया माता जी के जन्मशताब्दी वर्ष 2026 की सफलता के लिए प्राणपण से जुट जाने का अत्यंत हृदयस्पर्शी संदेश दिया। इस अवसर पर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने ब्रिसबेन अश्वमेध यज्ञ में सक्रिय योगदान देने वाले आत्मीय परिजनों को सम्मानित भी किया।

कैनबरा जन आन्दोलन बने ज्योति कलश यात्रा

कार्यकर्ता गोष्ठी और जनसंपर्क

ऑस्ट्रेलिया की राजधानी कैनबरा में परिजनों द्वारा भावभरे स्वागत के उपरांत कार्यकर्त्ता गोष्ठी रखी गई। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने इसमें ज्योति कलश यात्रा के संचालन की कार्ययोजना पर मार्गदर्शन प्रदान किया। वे पीढ़ियों से ऋषियुग्म का सानिध्य पा रहे भावनाशील परिजनों से मिले।

परिजनों ने भावविभोर होकर अपनी गुरुसत्ता के आशीर्वाद, अनुदानों और उनके कारण मिली सफलताओं का स्मरण किया। नई पीढ़ी और युवाओं ने अपनी आध्यात्मिक जिज्ञासाओं का समाधान पाया। वे गायत्री परिवार से जुड़कर जीवन को सफल एवं सार्थक बनाने के लिए संकल्पित हुए।

प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन और दीपयज्ञ

कैनबरा में आयोजित प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन और दीपयज्ञ में विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के प्रमुख सदस्यों तथा गायत्री परिवार के परिजनों ने भाग लिया। उन्हें जन्मशताब्दी वर्ष 2026 की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से अवगत कराते हुए डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने 'ज्योति कलश यात्रा' को मात्र एक आयोजन नहीं, बल्कि एक आंदोलन बनाने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम में विभिन्न संगठनों के प्रमुख प्रतिनिधियों का सम्मान किया गया। बाल संस्कारशाला में प्रशिक्षित बच्चों ने प्रज्ञा गीत पर आधारित भाव नृत्य प्रस्तुत किया। युवाओं ने अपनी गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।

मेलबर्न बच्चे, युवा, कार्यकर्त्ता सभी उत्साहित हुए

मेलबर्न में आयोजित दीप महायज्ञ में प्रतिभाओं को सम्मानित करते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

वीस्टेज इनडोर स्टेडियम में सेमिनार एवं दीप महायज्ञ

मेलबर्न नगर के वीस्टेज इनडोर स्टेडियम में 'जीवन अभिशाप या वरदान' विषय पर सेमिनार एवं दीप महायज्ञ सम्पन्न हुआ। इसमें सुदूर क्षेत्रों से इंजीनियर, डॉक्टर, वैज्ञानिक, जनसेवक, सामाजिक संगठनों से जुड़े अनेक लोग पधारे। प्रसन्नता से भरे चेहरे और मन में आत्मसंतोष लिए अनेक परिजनों ने अखिल विश्व गायत्री परिवार से जुड़ने, इसकी गतिविधियों को जानने एवं शान्तिकुञ्ज पधारने की इच्छा व्यक्त की।

श्री तेज कृष्ण जी, हेड ऑफ चेंसरी, इंडियन कॉन्सुलेट ऑफ ऑस्ट्रेलिया, सुश्री गीता स्टीफेंस जी, सेक्रेट्री और बेलारट इंडियन एसोशिएशन, श्री कुलवंत जोशी, प्रेसिडेंट, श्री दुर्गा मंदिर टेंपल और अनेक अतिविशिष्ट अतिथि भी उपस्थित रहे। उन सबके लिए यह एक अद्भुत, अलौकिक और जीवन को बदल देने वाला अनुभव रहा।

कार्यक्रम में विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों के प्रतिनिधियों ने शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का सम्मान किया। आयोजन से जुड़े सभी स्वयंसेवकों एवं गणमान्य अतिथियों का भी सम्मान किया गया। यह आयोजन सभी परिजनों के सम्मिलित पुरुषार्थ से अत्यंत सफल रहा।

कार्यकर्त्ताओं को संदेश : जन-जन तक पहुँचायें विचार क्रान्ति के बीज

21 अप्रैल को मेलबर्न पहुँचने पर सर्वप्रथम कार्यकर्त्ता गोष्ठी हुई। टोली के स्वागतोपरांत आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने अपनों से अपनी बात कही। 'ज्योति कलश यात्रा : योजना एवं स्वरूप' विषय पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि ज्योति कलश यात्राओं के माध्यम से ऋषियुग्म के बोए विचार क्रांति के बीजों को लेकर हमें समस्त विश्व में जाना है। हमें सभी को विश्व मानवता के हितों के साथ जोड़ना है, जगाना है। डॉ. चिन्मय जी ने सभी को जनसेवा और आत्म परिष्कार; दोनों लक्ष्य साथ लेकर चलने की प्रेरणा दी। प्रश्नोत्तरी के क्रम में परिजनों की जिज्ञासाओं का समाधान किया।

श्रद्धा और उल्लास से भर उठे कार्यकर्त्ता/परिजन

युवाओं ने गायत्री महामंत्र की दीक्षा ली

मेलबर्न में सक्रिय गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं की एक विशेष गोष्ठी हुई। इसमें भाग ले रहे युवाओं ने कहा कि अपने आदर्श आदरणीय डॉ. चिन्मय जी के ऊजार्वान मार्गदर्शन एवं परस्पर संवाद ने सभी को उनकी अंतर्निहित अपार संभावनाओं का बोध कराया है। इस प्राणवान संदेश को सुनने के बाद गोष्ठी में उपस्थित लगभग सभी नन्हें-नन्हें बच्चे, युवा, वृद्ध सभी वर्ग के लोगों ने शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि से गायत्री महामंत्र की दीक्षा ली। मेलबर्न में गायत्री परिवार की गतिविधियों को तीव्रतर करने में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का यह ऐतिहासिक प्रवास एक मील का पत्थर सिद्ध होगा, हर परिजन का यही भावपूर्ण उद्गार रहा।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी दीक्षा सेट देते हुए तथा दीक्षा लेते मिशन के लिए समर्पित युवा

बाल संकारशाला के बच्चों एवं उनके अभिभावकों का समागम

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी मेलबर्न में सुसंस्कारित नई पीढ़ी को गढ़ने के लिए चलाई जा रही बाल संस्कारशाला के बच्चों एवं अभिभावकों के समागम में पहुँचे। बाल संस्कारशाला संचालन से बच्चों में आए सकारात्मक परिवर्तन एवं प्रभावों से सभी अभिभावक अत्यंत प्रसन्न दिखाई दिये। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि की प्रेरणा से कार्यकर्त्ताओं ने अधिक से अधिक क्षेत्रों में नई बाल संस्कारशालाएँ आरंभ करने का संकल्प लिया।

नन्हें बच्चों ने आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी से असीम प्रेम पाया। इन सुखद दृश्यों को देखकर अभिभावकों का हृदय कृतज्ञता से भर गया। इस आयोजन में कई ऐसे अभिभावक मिले, जो स्वयं अपने दादा-दादी, नाना-नानी के माध्यम से किसी न किसी रूप में गायत्री परिवार से पूर्व से जुड़े रहे। वे शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि के समक्ष अपने हृदय के भाव व्यक्त करते हुए अपने आप को अत्यंत सौभाग्यशाली अनुभव कर रहे थे।

... पृष्ठ 6 से आगे के सिडनी प्रवास के शेष समाचार और चित्र

प्रबुद्ध जनों द्वारा सम्मान : सिडनी में नगर के जनसेवक, जनप्रतिनिधि, समाजसेवी वर्ग, प्रशासन, उद्योगपति, तकनीकी एवं अन्य क्षेत्रों से जुड़े महानुभावों द्वारा एक अभिनन्दन समारोह रखा गया। इन विशिष्ट महानुभावों ने डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को मानवता के क्षेत्र में उनके योगदान हेतु विशेष रूप से सम्मानित किया।

युवाओं को उज्ज्वल भविष्य का रोडमैप बताते देसंविवि के प्रति कुलपित जी

कार्यकर्त्ताओं ने सँजो रखी हैं गुरुदेव के साथ अपने बचपन की स्मृतियाँ

सिडनी स्थित तीर्थ पुरोहितों के संग चर्चा और सम्मान

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि से मिलने आए राजनेता

मेलबर्न प्रवास के कुछ और समाचार तथा एडीलेड व पर्थ में हुए कार्यक्रमों के समाचार क्रमशः अगले अंक में पढ़ें।

विचारों की शक्ति अकूत है। संसार पर शासन मनुष्य नहीं, विचार करते हैं। -स्मिथ

पहलगाम में हुई आतंकी घटना के विरुद्ध आक्रोश

शान्तिकुञ्ज ने दिवंगतों को श्रद्धांजलि दी

शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक आदरणीय श्री योगेन्द्र गिरि जी श्रद्धाञ्जलि सभा को संबोधित करते हुए

भारत कड़े कदम उठाकर एशिया और पूरे विश्व में शान्ति-सद्भाव स्थापित करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाएगा।

- श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

अखिल विश्व गायत्री परिवार ने 22 अप्रैल को पहलगाम में पाकिस्तानी आतंकवादियों द्वारा की गई 28 पर्यटकों की नृशंस हत्या पर गहरा क्षोभ और शोक व्यक्त करते हुए इस घटना की बड़े कड़े शब्दों में भर्त्सना की। अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने इस घटना पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए मारे गए लोगों के परिवारी जनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की।

श्रद्धेय डॉक्टर साहब ने इस घटना को मानवता के लिए गंभीर संकट बताया, कहा कि हमारी संस्कृति जहाँ शान्ति का संदेश देती रही है और समाज में समरसता एवं सद्भाव स्थापित करने के लिए सदा प्रयत्नशील रही है, वहीं इतिहास में आततायियों को धूल चटाने में भी हम पीछे नहीं रहे हैं। आज जब हमें आतंकवाद की जड़ उखाड़ने के लिए सारे विश्व का सहयोग और समर्थन मिल रहा है, तब भारत कड़े कदम उठाकर एशिया और पूरे विश्व में शान्ति-सद्भाव स्थापित करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाएगा। हम अपना युगधर्म निभाते हुए आतंक की इस विभीषिका के समाधान में योगदान देंगे।

प्रार्थना एवं श्रद्धांजलि सभा

शान्तिकुञ्ज परिवार ने 25 अप्रैल को पहलगाम की आतंकवादी घटना में दिवंगत हुए लोगों को श्रद्धाञ्जलि देने के लिए विशेष सभा का आयोजन किया। दिवंगत आत्माओं की शान्ति, सद्गति और परिवारी जनों को इस आघात को सहने की शक्ति मिले, ऐसी प्रार्थना के साथ दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धाञ्जलि दी गई। व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी ने इस अवसर पर कहा कि ऐसे अमानवीय कृत्य समाज की आध्यात्मिक चेतना को भी झकझोरते हैं।

ऑस्ट्रेलिया में श्रद्धाञ्जलि सभाएँ

पहलगाम की आतंकी घटना के समय देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ऑस्ट्रेलिया के प्रवास पर थे। उन्होंने मेलबॉर्न, एडीलेड और पर्थ में आयोजित कार्यक्रमों में इस आतंकी घटना में दिवंगत हुए लोगों और उनके परिजनों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की। इस अवसर पर उन्होंने मानवीय सद्भाव एवं वैश्विक एकता बढ़ाने के लिए आध्यात्मिक चेतना के विस्तार का आह्वान किया।

रैली निकालकर दिया राष्ट्र की रक्षा के लिए एकजुटता का संदेश

शान्तिकुञ्ज के कार्यकर्त्ताओं ने विशाल रैली के माध्यम से किया पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले का विरोध

शान्तिकुञ्ज के समस्त कार्यकर्त्ता भाई-बहिनों ने आतंक, अवांछनीयता, अराजकता के विरुद्ध एकजुटता दिखाते हुए आदरणीय व्यवस्थापक जी के नेतृत्व में जनजागरण यात्रा निकाली। प्रतिदिन सात दिनों तक निकाली गई एक घंटे की जनजागरण यात्रा में 500 से अधिक भाई-बहिनों ने भाग लिया। यात्रा के समापन पर गायत्री मंत्र एवं महामृत्युंजय मंत्र के साथ दिवंगतों को श्रद्धाञ्जलि दी गई।

गायत्री यज्ञ में 25000 श्रद्धालुओं ने दी श्रद्धाञ्जलि

मंदिर, मठ, आश्रम, देवालय व सर्व समाज का सामूहिक प्रयास

जयपुर (राजस्थान) के सुप्रसिद्ध श्री राधा गोविंद देव जी मंदिर में 27 अप्रैल को गायत्री परिवार के तत्त्वावधान में अनेक संस्थाओं को साथ लेकर जम्मू कश्मीर के पहलगाम में मारे गए 28 लोगों की आत्मशांति के लिए श्रद्धांजलि सभा और नौ कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। मंदिर के महंत श्री अंजन कुमार गोस्वामी के साथ-साथ जयपुर के सभी प्रमुख मंदिर, मठ, आश्रमों, देवालयों के संत महंत सहित सर्व समाज उपस्थित रहा। बड़ी संख्या में

महिलाओं ने भी आतंकी हमले में मारे गए लोगों के चित्र के समक्ष श्रद्धा सुमन अर्पित किए। सुबह से रात्रि तक चले श्रद्धांजलि कार्यक्रम में 25000 से अधिक लोगों की भागीदारी रही।

ऑस्ट्रेलिया में मिला विशिष्ट सम्मान

सांसद श्री रसेल वोरटली से हुई चर्चा ने खोले सम्पूर्ण ऑस्ट्रेलिया में युगचेतना के विस्तार के द्वार

एडीलेड। ऑस्ट्रेलिया

साउथ ऑस्ट्रेलियन लेजिस्लेटिव काउंसिल के प्रेसिडेंट एवं एडीलेड से सांसद माननीय श्री रसेल वोरटली ने संयुक्त राष्ट्र संघ और ब्रिटिश संसद जैसे प्रतिष्ठित वैश्विक मंचों की गरिमा बढ़ा चुके आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का एडीलेड आगमन पर विशेष स्वागत किया। उन्होंने डॉ. चिन्मय जी को साउथ ऑस्ट्रेलियन संसद में आमंत्रित किया। डॉ. चिन्मय जी पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों की व्यस्तताओं के बावजूद संसद भवन पहुँचे।

अध्यक्ष की कुर्सी पर आसीन आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, उनके दायें सांसद श्री रसेल वोरटली, दायें श्री सुरेन्द्र पाल

संसद भवन में एडीलेड के काउंसलर श्री सुरेन्द्र पाल जी ने शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का भावभरा स्वागत किया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने माननीय श्री रसेल वोरटली एवं उपस्थित गणमान्यों को गायत्री परिवार के दर्शन, स्वरूप एवं कार्यक्रम से अवगत कराया। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव द्वारा स्थापित नवयुग का संविधान-युग निर्माण सत्संकल्प की व्याख्या की। ऑस्ट्रेलियन सदन में इनकी स्थापना के सन्दर्भ में सकारात्मक चर्चा भी हुई।

माननीय सांसद श्री रसेल वोरटली साउथ ऑस्ट्रेलिया के अत्यंत प्रभावशाली मंत्री एवं सदन के अध्यक्ष भी रहे हैं। वे और सभी उपस्थित महानुभाव आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से बहुत प्रभावित हुए। सांसद महोदय ने डॉ. चिन्मय जी को ऑस्ट्रेलियन सदन के अध्यक्ष के आसन पर बिठा कर सम्मानित किया। इस अवसर को उन्होंने ऑस्ट्रेलियन सदन के लिए एक ऐतिहासिक, पवित्र एवं अविस्मरणीय पल बताया।

श्री वोरटली जी ने अपने भावी आयोजनों में गायत्री परिवार के साथ कार्य करने, हर स्तर पर सहयोग देने एवं शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार पधारने के भाव व्यक्त किये।

माननीय श्री वोरटली जी ने शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि को साउथ ऑस्ट्रेलियन पार्लियामेंट को संबोधित करने हेतु राजकीय अतिथि के रूप में पधारने का आमंत्रण भी दिया। उन्होंने अगले दिन एडीलेड प्रांत के प्रीमियर से भेंट करने तथा एक महत्त्वपूर्ण आयोजन की अध्यक्षता करने का आग्रह भी आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी से किया, किन्तु अगले दिन पर्थ जाने का कार्यक्रम पूर्व से ही निर्धारित होने के कारण वे इस आमंत्रण को स्वीकार नहीं कर सके।

गुरुकृपा से सांसद महोदय के साथ हुई मुलाकात ने भविष्य में अनेक अवसर के द्वार खोले हैं। संवाद से प्रभावित होकर श्री वोरटली जी ने ऑस्ट्रेलियन संसद में वर्ष भर में आयोजित होने वाले समस्त भारतीय त्यौहारों हेतु प्रमुख आयोजक की भूमिका निभाने का प्रस्ताव रखा, जिसे सहर्ष स्वीकार किया गया।

यह महत्त्वपूर्ण भेंट एवं चर्चा आने वाले समय में संपूर्ण ऑस्ट्रेलिया में गायत्री परिवार के विस्तार की दृष्टि से अत्यंत प्रभावशाली परिणाम लाएगी, ऑस्ट्रेलियाई सरकार के साथ ऐतिहासिक कार्यों की शृंखला का सूत्रपात करेगी।

शान्तिकुञ्ज द्वारा आरंभ की गई माता भगवती देवी अन्नपूर्णा योजना

अस्पतालों, आश्रमों, सेवारत कर्मचारियों तक पहुँचाया जा रहा है भोजन

जन्मशताब्दी वर्ष की योजना

प्रतिदिन 600-700 लोगों को कराया जा रहा है भोजन

चैत्र नवरात्र से गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज द्वारा सेवा का एक नया प्रकल्प 'माता भगवती देवी अन्नपूर्णा योजना' आरंभ किया गया है। इस योजना के अंतर्गत शान्तिकुञ्ज द्वारा हरिद्वार के अस्पतालों, मानवता की सेवा में संलग्न विभिन्न आश्रमों, सेवा कार्यों में संलग्न प्रशासनिक कर्मियों और अन्य जरूरतमंदों को भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है। प्रतिदिन लगभग 600-700 व्यक्ति इस योजना से लाभान्वित हो रहे हैं।

'सजल श्रद्धा' स्वरूपा परम वंदनीया माताजी भाव संवेदना और सेवा भावना की जीवंत प्रतिमा थीं। वे साक्षात माता अन्नपूर्णा ही थीं। हजारों परिजनों ने उनके हाथ का बनाया भोजन प्रसाद ग्रहण किया है। चाहे अखण्ड ज्योति

जिला अस्पताल, हरिद्वार में स्टाफ और मरीजों के परिजन भोजन प्राप्त करते हुए

संस्थान में वे अपनी व्यक्तिगत रसोई चलाती हों या तपोभूमि, शान्तिकुञ्ज में चलने वाला माता भगवती भोजनालय; कोई कभी भूखा नहीं सोया। शान्तिकुञ्ज के माँ भगवती भोजनालय में आज प्रतिदिन औसतन 10,000 श्रद्धालु भोजन प्रसाद ग्रहण करते हैं। माता अन्नपूर्णा की इन्हीं सेवाओं का विस्तार है 'माता भगवती देवी अन्नपूर्णा योजना'।

विगत एक माह में इस योजना के अंतर्गत हरिद्वार स्थित जिला चिकित्सालय, चन्द्रशेखर आजाद कुष्ठ आश्रम, चिदानंद कुष्ठ आश्रम, कुष्ठ आश्रम दयालपुरी और विभिन्न आवश्यक कार्यों में सेवाएँ प्रदान कर रहे कर्मचारियों तक भोजन पहुँचाया जा रहा है।

स्नेहसलिला श्रद्धेया शैल जीजी, श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी और आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की प्रेरणा और मार्गदर्शन में यह योजना चलाई जा रही है। श्रद्धेया जीजी ने कहा कि सेवा से साधक का व्यक्तित्व निखरता है। हर साधक को पीड़ितों की सेवा में तत्पर रहना ही चाहिए।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक**- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004, 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.org
समाचार प्रेषण : news@awgp.org

Publication date: 12.05.2025
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26